CBSE Class 12 Hindi Core Question Paper 2023 with Solution PDF-Set 2/C/2 - Compartment

Question Paper with Solutions

Conducted by the Central Board of Secondary Education (CBSE)

निर्धारित समय: 3 Hours **अधिकतम अंक: 80**

सामान्य निर्देश

(i) इस प्रश्न-पत्र में कुल 13 प्रश्न हैं। सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।
(ii) प्रश्न 1 में आंतरिक विकल्प दिया गया है; ऐसे प्रश्नों में केवल एक विकल्प का उत्तर दीजिए।
(iii) प्रश्नों में दिए गए निर्देशों का पालन करते हुए उत्तर लिखिए।
(iv) प्रत्येक प्रश्न के अंक उसके सामने दर्शाए गए हैं।

1(a). मुझे भ्रम होता है कि प्रत्येक पत्थर में
चमकता हीरा है,
हर एक छाती में आत्मा अधीरा है
प्रत्येक सुस्मित में विमल सदानीरा है,
मुझे भ्रम होता है कि प्रत्येक वाणी में
महाकाव्य पीड़ा है,
पलभर मैं सबमें से गुज़रना चाहता हूँ
इस तरह खुद को ही दिए-दिए फिरता हूँ
अजीब है ज़िंदगी !
बेवकूफ बनने की खातिर ही
सब तरफ अपने को लिए-लिए फिरता हूँ
और यह देख-देख बड़ा मज़ा आता है
कि मैं ठगा जाता हूँ ...
हृदय में मेरे ही,
प्रसन्नचित्त एक मूर्ख बैठा है
हँस-हँसकर अश्रुपूर्ण मन हुआ जाता है,
कि जगत स्वायत्त हुआ जाता है। [5 अंक]

1(a)(i). 'मुझे भ्रम होता है कि प्रत्येक वाणी में महाकाव्य पीड़ा है' पंक्ति में 'महाकाव्य पीड़ा' से क्या अभिप्राय है ? [1 अंक]

(A) प्रत्येक व्यक्ति के मन में महाकाव्य की तरह असीम पीड़ा लिखी है।
(B) प्रत्येक व्यक्ति के जीवन में महाकाव्य की तरह असीम अनुभव छिपे हैं।
(C) प्रत्येक व्यक्ति के अंतर्मन में असीम पीड़ादायक अनुभव है, जिन पर महाकाव्य की रचना हो सकती है।
(D) प्रत्येक व्यक्ति के मन में पीड़ा तो है, किन्तु सब पर महाकाव्य की रचना नहीं हो सकती है।

सही उत्तर: (C) प्रत्येक व्यक्ति के अंतर्मन में असीम पीड़ादायक अनुभव है, जिन पर महाकाव्य की रचना हो सकती है।

हल:

अवधारणा:

- शब्दों का अर्थ उनके काव्यगत संदर्भ से समझना चाहिए; यहाँ महाकाव्य पीड़ा गहन और विस्तृत मानवीय वेदना का संकेत है।
- कवि प्रत्येक वाणी के पीछे छिपे व्यक्ति के अंतर्मन और जीवनानुभवों को समझना चाहता है।

चरण 1: पंक्ति का आशय पहचानना कवि को प्रत्येक वाणी में महाकाव्य पीड़ा दिखाई देती है। इसका अर्थ है कि हर व्यक्ति के भीतर इतनी गहरी और व्यापक पीड़ाएँ हैं कि उन्हें विस्तार से व्यक्त किया जाए तो महाकाव्य रचा जा सकता है। यह मनुष्य के दुखों की व्यापकता के प्रति कवि की संवेदनशीलता है।

चरण 2: विकल्पों को परखना (A) पीड़ा को मन में लिखी हुई वस्तु मानकर अर्थ सीमित करता है। (B) सामान्य अनुभव कहता है, किंतु पीड़ा का भाव स्पष्ट नहीं करता। (D) महाकाव्य की संभावना का निषेध करता है। (C) अंतर्मन के असीम पीड़ादायक अनुभव और उन पर महाकाव्य रचने की संभावना, दोनों बताता है।

चरण 3: निष्कर्ष प्रत्येक व्यक्ति के अंतर्मन में असीम पीड़ादायक अनुभव हैं, जिन पर महाकाव्य की रचना हो सकती है। सही विकल्प (C) है।

त्वरित सुझाव: महाकाव्य पीड़ा को केवल बड़े अनुभव न मानें; उत्तर में गहन वेदना और उसके विस्तार, दोनों खोजें।

1(a)(ii). 'पलभर मैं सबमें से गुज़रना चाहता हूँ' पंक्ति का क्या आशय है ? [1 अंक]

(A) कवि सबके नज़दीक रहना चाहता है।

(B) कवि सबके जीवन की पीड़ा का अनुभव करना चाहता है।

(C) कवि सबके अनुभवों का लाभ उठाना चाहता है।

(D) कवि सभी रास्तों से गुज़रना चाहता है।

सही उत्तर: (B) कवि सबके जीवन की पीड़ा का अनुभव करना चाहता है।

हल:

अवधारणा:

- काव्यांश में किसी के भीतर से गुज़रना उसके मन और अनुभवों को संवेदनापूर्वक समझने का संकेत है।
- पंक्ति का अर्थ पिछली महाकाव्य पीड़ा वाली पंक्ति से जोड़कर निकालना चाहिए।

चरण 1: संदर्भ से भाव समझना कवि पहले प्रत्येक वाणी में महाकाव्य जैसी पीड़ा अनुभव करता है। उसके बाद सबमें से गुज़रने की इच्छा व्यक्त करता है। अतः उसकी इच्छा केवल लोगों के पास रहने की नहीं, बल्कि उनके जीवन के दुख को भीतर से महसूस करने की है। यह दूसरों की अनुभूति से जुड़ने का भाव है।

चरण 2: सभी विकल्पों की जाँच करना (A) केवल भौतिक निकटता बताता है, इसलिए अधूरा है। (C) दूसरों के अनुभवों से निजी लाभ उठाने का भाव रखता है, जो स्वयं को देने वाले कवि से मेल नहीं खाता। (D) रास्तों से चलने का शाब्दिक अर्थ लेता है। (B) दूसरों की जीवनगत पीड़ा अनुभव करने का सही भाव देता है।

चरण 3: निष्कर्ष कवि सबके जीवन की पीड़ा का अनुभव करना चाहता है। सही विकल्प (B) है।

त्वरित सुझाव: सबमें से गुज़रना पढ़ते समय पिछली पीड़ा वाली पंक्ति देखें और भौतिक यात्रा के स्थान पर भावनात्मक अनुभव चुनें।

1(a)(iii). जो दूसरों के दुख को अपना दुख मानकर चलते हैं, समाज उनके बारे में क्या सोचता है ? [1 अंक]

(A) उन्हें समझदार समझता है।

(B) उन्हें बेवकूफ समझता है।

(C) उनके बारे में सोचता ही नहीं है।

(D) उन्हें चालाक समझता है।

सही उत्तर: (B) उन्हें बेवकूफ समझता है।

हल:

अवधारणा:

- काव्यांश का उत्तर उसी में प्रयुक्त संकेतों से निर्धारित करना चाहिए; यहाँ बेवकूफ और मूर्ख शब्द निर्णायक हैं।
- दूसरों का दुख अपनाने वाला व्यक्ति स्वार्थपरक व्यवहार के बीच ठगा जाता है, फिर भी संवेदना नहीं छोड़ता।

चरण 1: निर्णायक शब्द पहचानना कवि कहता है कि वह बेवकूफ बनने की खातिर सब ओर अपने को लिए फिरता है। आगे वह अपने हृदय में प्रसन्नचित्त मूर्ख के बैठे होने की बात भी कहता है। ये शब्द बताते हैं कि दूसरों के दुख को अपना मानने वाले व्यक्ति को समाज व्यावहारिक लाभ की दृष्टि से समझदार नहीं मानता।

चरण 2: विकल्पों का मूल्यांकन करना (A) समझदार और (D) चालाक कहने का समर्थन काव्यांश नहीं करता; ये शब्द कविता के मूर्ख तथा ठगे जाने के संकेतों के विपरीत हैं। (C) भी ठीक नहीं, क्योंकि रचना में ऐसे व्यक्ति के प्रति एक दृष्टि व्यक्त हुई है। (B) बेवकूफ शब्द से कविता के संकेत का सीधा मेल बैठता है।

चरण 3: निष्कर्ष समाज ऐसे संवेदनशील लोगों को बेवकूफ समझता है। सही विकल्प (B) है।

त्वरित सुझाव: समाज की दृष्टि पूछी जाए तो कविता के बेवकूफ, ठगा और मूर्ख जैसे संकेत जोड़कर विकल्प चुनें।

1(a)(iv). जब लोग कवि को भावनात्मक रूप से ठगते हैं तो कवि को कैसा महसूस होता है ? [1 अंक]

(A) कवि को असीम आनन्द की प्राप्ति होती है।

(B) कवि को असीम दुख की प्राप्ति होती है।

(C) कवि की भावनाओं को ठेस पहुँचती है।

(D) कवि के ऊपर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है।

सही उत्तर: (A) कवि को असीम आनन्द की प्राप्ति होती है।

हल:

अवधारणा:

- कवि की अनुभूति उसके अपने कथन से पहचानी जाती है; सामान्य जीवन के अनुमान उत्तर का आधार नहीं हैं।
- बड़ा मज़ा आता है और प्रसन्नचित्त शब्द ठगे जाने पर भी आंतरिक आनंद का संकेत देते हैं।

चरण 1: कवि के कथन को पढ़ना कवि स्पष्ट कहता है कि उसे यह देखकर बड़ा मज़ा आता है कि वह ठगा जाता है। उसके हृदय में प्रसन्नचित्त मूर्ख बैठा है। इसलिए दूसरों से भावनात्मक रूप से ठगे जाने पर उसकी मुख्य प्रतिक्रिया रोष या शिकायत नहीं, बल्कि आनंद है। वह दूसरों के लिए स्वयं को देने में संतोष पाता है।

चरण 2: विरोधी विकल्प हटाना (B) असीम दुख और (C) भावनाओं को ठेस लगना इस प्रश्न में कवि की स्पष्ट आनंदपूर्ण प्रतिक्रिया के अनुकूल नहीं हैं। अश्रुपूर्ण मन का उल्लेख होने पर भी हँसी और प्रसन्नचित्तता साथ हैं। (D) प्रभावहीनता भी गलत है, क्योंकि कवि आनंद अनुभव करता है। (A) उसी प्रमुख अनुभूति को व्यक्त करता है।

चरण 3: निष्कर्ष भावनात्मक रूप से ठगे जाने पर कवि को असीम आनंद की प्राप्ति होती है। सही विकल्प (A) है।

त्वरित सुझाव: ठगे जाने से दुख का सामान्य अनुमान न लगाएँ; बड़ा मज़ा आता है को कवि की वास्तविक प्रतिक्रिया का प्रमाण बनाएँ।

1(a)(v). उपर्युक्त काव्यांश के आधार पर कवि के विषय में पता चलता है कि वह : [1 अंक]

(A) भावुकता से परिपूर्ण है।

(B) विनम्रता से परिपूर्ण है।

(C) व्यावहारिकता से परिपूर्ण है।

(D) कोमलता से परिपूर्ण है।

सही उत्तर: (A) भावुकता से परिपूर्ण है।

हल:

अवधारणा:

- कवि प्रत्येक व्यक्ति में अच्छाई और उसके भीतर छिपी पीड़ा को अनुभव करना चाहता है। यह संवेदनशील दृष्टि उसकी भावुकता का प्रमाण है।
- उत्तर का आधार दिए गए पाठ का कथ्य और प्रसंग है; उससे बाहर की कल्पना नहीं जोड़ी जाती।

चरण 1: काव्यगत साक्ष्य 'पलभर मैं सबमें से गुज़रना चाहता हूँ' तथा 'हँस-हँसकर अश्रुपूर्ण मन हुआ जाता है' में दूसरों के अनुभवों से जुड़ने और द्रवित होने की प्रवृत्ति है। वह ठगे जाने पर भी आत्मीयता बनाए रखता है।

चरण 2: विकल्पों का परीक्षण (B) विनम्रता से अधिक यहाँ सहानुभूति और भावना का आवेग प्रमुख है। (C) व्यावहारिकता होती तो कवि बार-बार ठगे जाने से बचता। (D) कोमलता भावुकता का निकट गुण है, किंतु पूरे अंश में भावनात्मक तन्मयता अधिक स्पष्ट है।

चरण 3: निष्कर्ष कवि भावुकता से परिपूर्ण है। सही विकल्प (A) है।

त्वरित सुझाव: व्यक्तित्व के प्रश्न में अकेले विशेषण के बजाय पूरे काव्यांश की भावात्मक प्रवृत्ति को आधार बनाएँ।

अथवा

1(b). बरसती साँझ है
स्थगित मेघों ने डाल दिया है
आसमान में डेरा
पहले गरजे भयंकर
चिंघाड़ उठे हों
हाथियों के झुंड जैसे क्षितिज में
लंबे सफेद दाँतों-सी कड़कदार बिजली
काली विशाल देह
धूमिल अँधेरे का विस्तार
ऋतु चक्र में परिवर्तन की इस बेला में
सावन के आवारा मेघ
भटकते हुए आए हैं
पृथ्वी का पता पूछते
बरसो हे मेघ
जल्दी बरसकर खाली करो
शरद के लिए आसमानी सिंहासन
कि शरद अब आता होगा
आती होगी उसकी टपकाती देह
भरी-भरी हरी पृथ्वी
अब ठंडी चाँदनी से नहाएगी
धान को अभी पकना है
सुनहरा होना है
किसानों के बैरी न बनो मेघ
बरसो, बरसकर खाली करो गगन
हे अक्टूबर के अनाहूत मेघ ! [5 अंक]

1(b)(i). उपर्युक्त काव्यांश में कवि ने आसमान में गरजते बादलों की तुलना किससे की है ? [1 अंक]

(A) लंबे सफेद दाँतों से
(B) हाथियों के झुंड से
(C) काली विशाल देह से
(D) धूमिल अँधेरे से

सही उत्तर: (B) हाथियों के झुंड से

हल:

अवधारणा:

- उपमा में प्रस्तुत वस्तु और उससे मिलती-जुलती दूसरी वस्तु की पहचान की जाती है। यहाँ गर्जन की ध्वनि तुलना का आधार है।
- उत्तर का आधार दिए गए पाठ का कथ्य और प्रसंग है; उससे बाहर की कल्पना नहीं जोड़ी जाती।

चरण 1: साक्ष्य की पहचान काव्यांश में 'पहले गरजे भयंकर' के बाद 'चिंघाड़ उठे हों / हाथियों के झुंड जैसे क्षितिज में' आया है। अतः बादलों की भयंकर गर्जना हाथियों के समूह की चिंघाड़ जैसी बताई गई है।

चरण 2: अन्य विकल्पों की जाँच (A) लंबे सफेद दाँत बिजली के लिए उपमान हैं, मेघों की गर्जना के लिए नहीं। (C) काली विशाल देह बादलों के रूप का वर्णन है। (D) धूमिल अँधेरा उनके फैलाव से जुड़ा दृश्य है। ये तीनों गर्जन की अपेक्षित तुलना नहीं बताते।

चरण 3: निष्कर्ष गरजते बादलों की तुलना हाथियों के झुंड से की गई है। सही विकल्प (B) है।

त्वरित सुझाव: उपमान चुनते समय प्रश्न में बताए गुण, यहाँ गर्जन की ध्वनि, से संबंधित पंक्ति ही खोजें।

1(b)(ii). 'सावन के आवारा मेघ आसमान में कब आए हैं ?' इस प्रश्न का उत्तर देने के लिए निम्नलिखित कथनों को पढ़कर उचित विकल्प चुनकर लिखिए।

कथन :

I. सावन मास के प्रारंभ होने पर

II. सावन मास के अंत होने पर

III. वर्षा ऋतु की समाप्ति और शरद ऋतु के प्रारंभ होने पर

IV. ऋतु-चक्र में परिवर्तन की संधि-बेला पर

ऊपरलिखित कथनों में से कौन-सा/कौन-से सही है/हैं ? [1 अंक]

(A) केवल IV

(B) I और II

(C) III और IV

(D) II, III और IV

सही उत्तर: (C) III और IV

हल:

अवधारणा:

- काव्यांश में समय का निर्धारण केवल मेघों के सावनी स्वरूप से नहीं, ऋतु परिवर्तन और अक्टूबर के स्पष्ट संकेत से होता है।
- उत्तर का आधार दिए गए पाठ का कथ्य और प्रसंग है; उससे बाहर की कल्पना नहीं जोड़ी जाती।

चरण 1: कथनों की परीक्षा 'ऋतु चक्र में परिवर्तन की इस बेला में', 'कि शरद अब आता होगा' और 'हे अक्टूबर के अनाहूत मेघ' वर्षा के विदा लेने और शरद के आगमन का संकेत देते हैं। इसलिए वर्षा की समाप्ति और शरद का प्रारंभ बताने वाला कथन III तथा ऋतु-परिवर्तन की संधि-बेला बताने वाला IV सही हैं।

चरण 2: विकल्पों का मूल्यांकन I तथा II क्रमशः सावन मास के आरंभ और अंत की बात करते हैं। कवि ने समय अक्टूबर और शरद के आगमन का बताया है; केवल मेघों को सावनी कहने से उसे सावन मास नहीं माना जा सकता। इसलिए I वाला (B) और II को जोड़ने वाला (D) गलत हैं। (A) में सही कथन III छूट जाता है। III और IV को साथ रखने वाला विकल्प ही पूरे समय-संकेत को व्यक्त करता है।

चरण 3: निष्कर्ष सही कथन III और IV हैं। सही विकल्प (C) है।

त्वरित सुझाव: ऋतु-संबंधी उत्तर में मेघों के नाम के साथ शरद के आगमन और अंतिम संबोधन का संकेत भी जोड़ें।

1(b)(iii). 'जल्दी बरसकर खाली करो

शरद के लिए आसमानी सिंहासन' — इन काव्य-पंक्तियों में 'आसमानी सिंहासन' से क्या अभिप्राय है ? [1 अंक]

(A) आसमानी रंग का सिंहासन

(B) आसमान के समान सिंहासन

(C) आसमान रूपी सिंहासन

(D) आसमान से बना सिंहासन

सही उत्तर: (C) आसमान रूपी सिंहासन

हल:

अवधारणा:

- जब एक वस्तु को दूसरी का रूप देकर कहा जाए तो उसका अभिप्राय रूपकात्मक होता है। आसमान को यहाँ ऋतुओं के अधिकार-क्षेत्र की तरह देखा गया है।
- उत्तर का आधार दिए गए पाठ का कथ्य और प्रसंग है; उससे बाहर की कल्पना नहीं जोड़ी जाती।

चरण 1: पंक्ति का संदर्भ कवि मेघों से जल्दी बरसकर आकाश खाली करने को कहता है ताकि आने वाली शरद ऋतु वहाँ अपना स्थान ले सके। इसी कारण आकाश को 'आसमानी सिंहासन' कहा गया है। सिंहासन सत्ता या प्रतिष्ठित स्थान का बिंब प्रस्तुत करता है।

चरण 2: विकल्पों का परीक्षण (A) केवल रंग का अर्थ देता है और ऋतु के स्थान ग्रहण करने का भाव नहीं बताता। (B) में समानता का भाव है, जबकि यहाँ आसमान ही सिंहासन माना गया है। (D) उसे आसमान से निर्मित भौतिक वस्तु बना देता है। इसलिए ये अर्थ प्रसंग के अनुकूल नहीं हैं।

चरण 3: निष्कर्ष 'आसमानी सिंहासन' का अर्थ आसमान रूपी सिंहासन है। सही विकल्प (C) है।

त्वरित सुझाव: रूपक में दोनों वस्तुओं को एक रूप माना जाता है; समानता मात्र बताने वाले विकल्प से उसे अलग करें।

1(b)(iv). 'आती होगी उसकी टपकाती देह' – काव्य-पंक्ति के संदर्भ में लिखिए की शरद की देह क्या टपकाती आएगी ? [1 अंक]

(A) ठंडी चाँदनी

(B) बारिश की बूँदें

(C) ओस की बूँदें

(D) चाँदनी-सी ओस

सही उत्तर: (C) ओस की बूँदें

हल:

अवधारणा:

- शरद ऋतु के मानवीकरण में उसकी देह से टपकने वाली बूँदों का अर्थ ओस है। प्रकृति के अलग-अलग बिंबों का आशय उनके अपने संदर्भ में समझना चाहिए।
- काव्यांश में शरद की ओस और पृथ्वी को नहलाती ठंडी चाँदनी दो संबद्ध किंतु अलग प्राकृतिक दृश्य हैं।

चरण 1: निर्णायक पंक्ति 'आती होगी उसकी टपकाती देह' में शरद को मानवीय देह दी गई है। टपकने का संकेत शरद में पड़ने वाली ओस की बूँदों की ओर है। कवि वर्षा के मेघों को जाने के लिए कह रहा है और उनके बाद आने वाली शरद का नम तथा शीतल वातावरण उभारता है।

चरण 2: अन्य विकल्पों का परीक्षण (A) ठंडी चाँदनी से पृथ्वी के नहाने की बात अगली पंक्तियों में अलग बिंब के रूप में आती है; उसे देह से टपकने वाला द्रव नहीं माना जाएगा। (B) बारिश की बूँदें वर्षा ऋतु का संकेत हैं। (D) चाँदनी-सी ओस अतिरिक्त तुलना जोड़ता है, जो इस पंक्ति में नहीं है। टपकती देह के लिए सीधा उपयुक्त अर्थ (C) ओस की बूँदें है।

चरण 3: निष्कर्ष शरद की देह ओस की बूँदें टपकाती आएगी। सही विकल्प (C) है।

त्वरित सुझाव: प्रकृति के जुड़े बिंबों को अलग पहचानें: टपकती देह ओस का और पृथ्वी का नहाना चाँदनी का संकेत है।

1(b)(v). कवि सावन के बादलों से आकाश खाली करने के लिए क्यों कह रहा है ? [1 अंक]

(A) लगातार होने वाली बारिश से थकने के कारण

(B) बादलों को अनिमंत्रित अतिथि मानने के कारण

(C) शरद ऋतु के आगमन का स्वागत करने के लिए

(D) खेतों में खड़ी फ़सल के पकने के लिए

सही उत्तर: (C) शरद ऋतु के आगमन का स्वागत करने के लिए

हल:

अवधारणा:

- कवि का मुख्य आग्रह समझने के लिए उसकी प्रत्यक्ष संबोधन वाली पंक्तियों को आधार बनाना चाहिए। यहाँ ऋतुओं का क्रम और शरद का आगमन केंद्रीय है।
- उत्तर का आधार दिए गए पाठ का कथ्य और प्रसंग है; उससे बाहर की कल्पना नहीं जोड़ी जाती।

चरण 1: मुख्य उद्देश्य 'जल्दी बरसकर खाली करो / शरद के लिए आसमानी सिंहासन' में मेघों से स्थान छोड़ने का उद्देश्य स्पष्ट है। कवि चाहता है कि शरद आए और पृथ्वी ठंडी चाँदनी से नहाए। इसलिए शरद के स्वागत वाला कथन सबसे सीधा उत्तर है।

चरण 2: अन्य विकल्पों का मूल्यांकन (A) में कवि की निजी थकान जोड़ दी गई है, जिसका अंश में उल्लेख नहीं है। (B) अनाहूत संबोधन को कारण मानता है, जबकि मुख्य आग्रह शरद के लिए स्थान छोड़ना है। (D) फसल पकने की चिंता अंश में अवश्य है, पर आकाश खाली करने के प्रत्यक्ष अनुरोध का प्रमुख उद्देश्य शरद का आगमन है।

चरण 3: निष्कर्ष कवि शरद ऋतु के आगमन का स्वागत करने के लिए आकाश खाली करने को कहता है। सही विकल्प (C) है।

त्वरित सुझाव: मुख्य उद्देश्य पूछे जाने पर प्रत्यक्ष आग्रह वाली पंक्ति चुनें; सहायक प्रसंग को केंद्रीय कारण न बनाएँ।

---

2. मनुष्य और प्रकृति का गहरा नाता है। हमारा शरीर पाँच प्राकृतिक तत्त्वों से ही बना हुआ है। हमारा परिवेश भी प्रकृति के ही आधार पर बना हुआ है। मनुष्य सतत विकास की ओर अग्रसर रहता है। विकास होना भी चाहिए, लेकिन प्रकृति का विनाश करके नहीं। हरे-भरे जंगलों को काटकर, कंक्रीट के जंगल खड़े किए जा रहे हैं; नहरों, नदियों में स्वच्छ जल की अपेक्षा दूषित पानी की मात्रा अधिक हो गई है। मानव के स्वार्थ ने गंगा जैसी पवित्र नदी तक को नहीं छोड़ा है। कल-कारखानों एवं गाड़ियों द्वारा इतना प्रदूषण उत्सर्जित किया जा रहा है कि कई बार तो सही से साँस लेना भी दुष्कर कार्य प्रतीत होता है।

हम सारी खुशियाँ भौतिक साधनों या यंत्रों में तलाश रहे हैं। प्राकृतिक दृश्यों से हम आज भी आनन्दित होते हैं, यह पूर्णतया सत्य है; किन्तु क्या हमने प्रकृति को प्राकृतिक रूप में रहने दिया है। मोबाइल, टी.वी. आदि की स्क्रीन पर हमें सारे दृश्य अप्रतिम सुन्दर लगते हैं, किन्तु प्रकृति के साहचर्य में हम नहीं जाना चाहते और जाते भी हैं तो वहाँ भी हम प्रदूषण फैलाने में कोई कमी शेष नहीं छोड़ते। अभिमन्यु की तरह हम तथाकथित विकास के चक्रव्यूह में घुस तो गए हैं, पर उसे पार करने का मार्ग हमें सूझ ही नहीं रहा है। हम आगामी पीढ़ियों का भविष्य अंधकारमय करने की कोई कमी शेष नहीं छोड़ना चाहते हैं। सारी प्रकृति का दोहन स्वयं ही कर लेना चाहते हैं, ऊपर से झूठा अभिमान यह कि यह सब हम आगामी पीढ़ी का भविष्य रोशन करने के लिए ही कर रहे हैं।

जीवन की सार्थकता इसी में है कि भौतिकता की चाशनी में डूबे यांत्रिक जीवन को छोड़कर वास्तविक प्राकृतिक जीवन की शरण में जाया जाए और सीमित साधनों के उपयोग से ही जीवन को सुन्दरतम एवं आनन्दित बनाया जाए। इसका प्रारम्भ दूसरों को उपदेश देकर नहीं, अपितु स्वयं से प्रारम्भ करके अनुकरणीय उदाहरण छोड़ा जाए। जब सब ऐसा करने की ओर प्रवृत्त होंगे, तब हमारा परिवेश और जीवन सुन्दरतम एवं मधुरतम हो जाएगा। [10 अंक]

2(i). मनुष्य निरन्तर किसकी ओर अग्रसर रहता है ? [1 अंक]

(A) प्रकृति की ओर

(B) विकास की ओर

(C) विनाश की ओर

(D) धर्म की ओर

सही उत्तर: (B) विकास की ओर

हल:

अवधारणा:

- प्रत्यक्ष बोध वाले प्रश्न में गद्यांश के स्पष्ट कथन से उत्तर लिया जाता है। लेखक की चेतावनी और वर्णित प्रवृत्ति को अलग समझना आवश्यक है।
- उत्तर का आधार दिए गए पाठ का कथ्य और प्रसंग है; उससे बाहर की कल्पना नहीं जोड़ी जाती।

चरण 1: निर्णायक वाक्य गद्यांश के आरंभ में कहा गया है कि 'मनुष्य सतत विकास की ओर अग्रसर रहता है'। प्रश्न का 'निरन्तर' इसी 'सतत' का समानार्थी है। अत: उत्तर विकास की ओर है।

चरण 2: विकल्पों का परीक्षण (A) प्रकृति की ओर बढ़ना लेखक का वांछित संदेश है, मानव की यहाँ वर्णित निरंतर प्रवृत्ति नहीं। (C) विनाश असंतुलित विकास का दुष्परिणाम है, निर्दिष्ट लक्ष्य नहीं। (D) धर्म की ओर अग्रसर रहने की बात गद्यांश में कही ही नहीं गई है। इस प्रकार केवल विकास वाला विकल्प मूल कथन से सीधे मेल खाता है।

चरण 3: निष्कर्ष मनुष्य निरन्तर विकास की ओर अग्रसर रहता है। सही विकल्प (B) है।

त्वरित सुझाव: प्रश्न के शब्द का गद्यांश में समानार्थी खोजें; यहाँ निरन्तर और सतत एक ही दिशा का संकेत देते हैं।

2(ii). निम्नलिखित कथन-कारण को ध्यानपूर्वक पढ़िए और उसके बाद दिए गए विकल्पों में से कोई एक सही विकल्प चुनकर लिखिए।

कथन (A) : विकास होना भी चाहिए, लेकिन प्रकृति का विनाश करके नहीं।

कारण (R) : विकास के साथ-साथ प्रकृति को नष्ट होने से भी बचाना होगा। [1 अंक]

(A) कथन (A) सही है, लेकिन कारण (R) कथन (A) की ग़लत व्याख्या करता है।

(B) कथन (A) तथा कारण (R) दोनों ग़लत हैं।

(C) कथन (A) ग़लत है, लेकिन कारण (R) सही है।

(D) कथन (A) तथा कारण (R) दोनों सही हैं तथा कारण (R), कथन (A) की सही व्याख्या करता है।

सही उत्तर: (D) कथन (A) तथा कारण (R) दोनों सही हैं तथा कारण (R), कथन (A) की सही व्याख्या करता है।

हल:

अवधारणा:

- कथन तथा कारण की सत्यता अलग-अलग जाँची जाती है। फिर देखा जाता है कि कारण कथन के आशय को स्पष्ट करता है या नहीं।
- इस गद्यांश का संदेश प्रकृति को बचाते हुए विकास करना है।

चरण 1: कथन का मूल्यांकन कथन (A) सही है। गद्यांश में स्पष्ट कहा गया है कि विकास होना चाहिए, लेकिन प्रकृति का विनाश करके नहीं। लेखक विकास को रोकने के बजाय उसके संतुलित स्वरूप पर बल देता है।

चरण 2: कारण का मूल्यांकन कारण (R) भी सही है। विकास के साथ प्रकृति को नष्ट होने से बचाना आवश्यक है। प्रदूषण, वनों की कटाई और नदियों के दूषित होने के उदाहरण इसी आवश्यकता को पुष्ट करते हैं।

चरण 3: दोनों के संबंध की जाँच कारण बताता है कि विकास करते हुए पर्यावरण का संरक्षण जरूरी है; यही कथन की सही व्याख्या है। इसलिए (A) में गलत व्याख्या कहना अनुचित है। (B) दोनों को गलत और (C) कथन को गलत बताता है, जबकि दोनों गद्यांश के अनुरूप हैं।

चरण 4: निष्कर्ष कथन और कारण दोनों सही हैं और कारण कथन की सही व्याख्या करता है। सही विकल्प (D) है।

त्वरित सुझाव: पहले दोनों वाक्यों की सत्यता जाँचें, फिर प्रकृति-संरक्षण के साझा आशय से उनका संबंध स्पष्ट करें।

2(iii). निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए :

I. नदियों में स्वच्छ जल की मात्रा बढ़ती जा रही है।

II. विकास के नाम पर कंक्रीट के जंगल खड़े किए जा रहे हैं।

III. हमारे परिवेश और प्राकृतिक परिवेश के आधार भिन्न हैं।

ऊपरलिखित कथनों में से कौन-सा/कौन-से सही है/हैं ? [1 अंक]

(A) केवल I

(B) केवल II

(C) केवल III

(D) I, II एवं III सभी

सही उत्तर: (B) केवल II

हल:

अवधारणा:

- अपठित गद्यांश का उत्तर उसके कथनों और प्रसंग के आधार पर निर्धारित किया जाता है।
- सही विकल्प का अर्थ गद्यांश से मेल खाना चाहिए; अन्य विकल्पों को भी पाठ के प्रमाण से परखना चाहिए।

चरण 1: गद्यांश में प्रमाण पहचानें गद्यांश में नदियों में स्वच्छ जल की अपेक्षा दूषित पानी अधिक होने की बात है। इसलिए स्वच्छ जल बढ़ने वाला कथन I गलत है। हमारा परिवेश भी प्रकृति के आधार पर बना है; अतः दोनों के आधार भिन्न बताने वाला कथन III भी गलत है।

चरण 2: विकल्पों की तुलना करें लेखक स्पष्ट कहता है कि हरे-भरे जंगल काटकर कंक्रीट के जंगल खड़े किए जा रहे हैं। इससे कथन II का समर्थन होता है। विकल्प (A) और (C) गलत कथनों को सही बताते हैं तथा (D) तीनों को सही मानता है; इसलिए ये स्वीकार्य नहीं हैं।

चरण 3: निष्कर्ष केवल कथन II सही है। अतः सही विकल्प (B) है।

त्वरित सुझाव: हर कथन के लिए गद्यांश की अलग पंक्ति खोजें; एक गलत कथन मिलते ही सभी कथनों वाला विकल्प हटाएँ।

2(iv). मनुष्य सारी खुशियाँ कहाँ तलाश रहा है ? [1 अंक]

(A) प्राकृतिक परिवेश में

(B) धार्मिक परिवेश में

(C) हरे-भरे वनों में

(D) भौतिक साधनों में

सही उत्तर: (D) भौतिक साधनों में

हल:

अवधारणा:

- अपठित गद्यांश का उत्तर उसके कथनों और प्रसंग के आधार पर निर्धारित किया जाता है।
- सही विकल्प का अर्थ गद्यांश से मेल खाना चाहिए; अन्य विकल्पों को भी पाठ के प्रमाण से परखना चाहिए।

चरण 1: गद्यांश में प्रमाण पहचानें दूसरे अनुच्छेद के आरंभ में लिखा है कि हम सारी खुशियाँ भौतिक साधनों या यंत्रों में तलाश रहे हैं। प्रश्न वर्तमान मनुष्य की इसी प्रवृत्ति के बारे में पूछता है। यहाँ लेखक की सलाह और मनुष्य के वास्तविक व्यवहार में अंतर रखना आवश्यक है।

चरण 2: विकल्पों की तुलना करें विकल्प (A) प्राकृतिक परिवेश तथा (C) हरे-भरे वन प्रकृति से जुड़े हैं, जबकि कथन भौतिक साधनों पर निर्भरता बताता है। (B) धार्मिक परिवेश का इस संदर्भ में उल्लेख नहीं है। इसलिए इन तीनों के बजाय कथन से सीधे मेल खाने वाला विकल्प चुनना चाहिए।

चरण 3: निष्कर्ष मनुष्य सारी खुशियाँ भौतिक साधनों में तलाश रहा है। अतः सही विकल्प (D) है।

त्वरित सुझाव: प्रश्न में मनुष्य का वर्तमान व्यवहार पूछा गया है; उत्तर में लेखक का आदर्श प्राकृतिक जीवन न चुनें।

2(ix). जीवन को सुन्दरतम बनाने के लिए मनुष्य को निम्नलिखित में से कौन-से कदम उठाए जाने की जरूरत है ? [1 अंक]

(A) साधनों का अधिकाधिक उपयोग करना

(B) दूसरों को अधिकाधिक उपदेश देना

(C) न्यूनतम साधन निर्भरता का स्व-उदाहरण प्रस्तुत करना

(D) भौतिकता की चाशनी का आनन्द उठाना

सही उत्तर: (C) न्यूनतम साधन निर्भरता का स्व-उदाहरण प्रस्तुत करना

हल:

अवधारणा:

- अपठित गद्यांश का उत्तर उसके कथनों और प्रसंग के आधार पर निर्धारित किया जाता है।
- सही विकल्प का अर्थ गद्यांश से मेल खाना चाहिए; अन्य विकल्पों को भी पाठ के प्रमाण से परखना चाहिए।

चरण 1: गद्यांश में प्रमाण पहचानें अंतिम अनुच्छेद में लेखक सीमित साधनों के उपयोग से जीवन सुंदर और आनंदित बनाने की बात करता है। साथ ही वह दूसरों को उपदेश देने के बजाय स्वयं से शुरुआत करके अनुकरणीय उदाहरण प्रस्तुत करने को कहता है।

चरण 2: विकल्पों की तुलना करें विकल्प (C) में सीमित साधन और स्वयं उदाहरण बनना, दोनों आवश्यक बातें हैं। (A) अधिकाधिक साधन-उपयोग सीमित उपयोग के विरुद्ध है। (B) उपदेश देने को प्राथमिकता देता है, जिसे लेखक नकारता है। (D) भौतिकता में डूबने की प्रवृत्ति है, जिससे बाहर आने की सलाह दी गई है।

चरण 3: निष्कर्ष न्यूनतम साधन-निर्भरता का स्व-उदाहरण प्रस्तुत करना चाहिए। अतः सही विकल्प (C) है।

त्वरित सुझाव: अंतिम अनुच्छेद में साधनों के सीमित उपयोग और स्वयं से शुरुआत, दोनों को जोड़ने वाला विकल्प चुनें।

2(v). मनुष्य का मन क्या देखकर आनन्द का अनुभव करता है ? [1 अंक]

(A) नए-नए चलचित्र

(B) प्राकृतिक दृश्य

(C) कंक्रीट के जंगल

(D) मोबाइल स्क्रीन पर आने वाले संदेश

सही उत्तर: (B) प्राकृतिक दृश्य

हल:

अवधारणा:

- अपठित गद्यांश का उत्तर उसके कथनों और प्रसंग के आधार पर निर्धारित किया जाता है।
- सही विकल्प का अर्थ गद्यांश से मेल खाना चाहिए; अन्य विकल्पों को भी पाठ के प्रमाण से परखना चाहिए।

चरण 1: गद्यांश में प्रमाण पहचानें गद्यांश का सीधा कथन है कि प्राकृतिक दृश्यों से हम आज भी आनंदित होते हैं। लेखक इसे पूर्णतया सत्य बताता है। इसलिए आनंद का स्रोत पहचानते समय इसी स्पष्ट वाक्य को आधार बनाना चाहिए, किसी सामान्य मनोरंजन-साधन को नहीं।

चरण 2: विकल्पों की तुलना करें (A) नए चलचित्र और (D) मोबाइल के संदेश मनोरंजन दे सकते हैं, किंतु गद्यांश में इनके लिए यह बात नहीं कही गई है। (C) कंक्रीट के जंगल प्रकृति-विनाश के संदर्भ में आए हैं। स्क्रीन पर दिखने वाले सुंदर दृश्यों का उल्लेख भी प्राकृतिक सुंदरता से संबंधित है, संदेशों से नहीं।

चरण 3: निष्कर्ष मनुष्य प्राकृतिक दृश्य देखकर आनंद का अनुभव करता है। अतः सही विकल्प (B) है।

त्वरित सुझाव: आनंद के स्रोत के लिए उसी वाक्य को चुनें जिसमें लेखक ने प्राकृतिक दृश्यों का सीधा उल्लेख किया है।

2(vi). मनुष्य और प्रकृति के संबंध के विषय में निम्नलिखित में से कौन-सा कथन असत्य है ? [1 अंक]

(A) मनुष्य लगातार प्रकृति के साथ छेड़छाड़ कर रहा है।

(B) मनुष्य प्रकृति के साहचर्य में नहीं जाना चाहता।

(C) प्राकृतिक परिवेश को मनुष्य ने प्रदूषण रहित रखा है।

(D) मनुष्य यांत्रिक होता जा रहा है।

सही उत्तर: (C) प्राकृतिक परिवेश को मनुष्य ने प्रदूषण रहित रखा है।

हल:

अवधारणा:

- अपठित गद्यांश का उत्तर उसके कथनों और प्रसंग के आधार पर निर्धारित किया जाता है।
- सही विकल्प का अर्थ गद्यांश से मेल खाना चाहिए; अन्य विकल्पों को भी पाठ के प्रमाण से परखना चाहिए।

चरण 1: गद्यांश में प्रमाण पहचानें प्रश्न में असत्य कथन पहचानना है। गद्यांश नदियों में दूषित जल, कारखानों और गाड़ियों से प्रदूषण तथा साँस लेने में कठिनाई का वर्णन करता है। इसलिए परिवेश को प्रदूषण रहित रखने का दावा गद्यांश के प्रतिकूल है।

चरण 2: विकल्पों की तुलना करें (A) प्रकृति से छेड़छाड़ का समर्थन जंगलों की कटाई और प्रदूषण से होता है। (B) प्रकृति के साहचर्य में न जाने की बात लेखक सीधे कहता है। (D) यांत्रिक होते जीवन का उल्लेख अंतिम अनुच्छेद में है। ये तीनों गद्यांशानुसार सत्य हैं, इसलिए असत्य कथन के उत्तर नहीं बनते।

चरण 3: निष्कर्ष प्राकृतिक परिवेश को मनुष्य ने प्रदूषण रहित रखा है, यह कथन असत्य है। अतः सही विकल्प (C) है।

त्वरित सुझाव: असत्य शब्द को पहले पहचानें, फिर प्रदूषण के वर्णन से उलटा दावा करने वाला विकल्प चुनें।

2(vii). विकास के नाम पर प्रकृति के साथ खिलवाड़ करके आगामी पीढ़ी के लिए मनुष्य क्या कर रहा है ? गद्यांश के आधार पर लिखिए। [1 अंक]

(A) उसका भविष्य सँवार रहा है।

(B) उसका भविष्य धूमिल कर रहा है।

(C) उसका भविष्य रोशन कर रहा है।

(D) उसके भविष्य के लिए व्यापक तैयारी कर रहा है।

सही उत्तर: (B) उसका भविष्य धूमिल कर रहा है।

हल:

अवधारणा:

- अपठित गद्यांश का उत्तर उसके कथनों और प्रसंग के आधार पर निर्धारित किया जाता है।
- सही विकल्प का अर्थ गद्यांश से मेल खाना चाहिए; अन्य विकल्पों को भी पाठ के प्रमाण से परखना चाहिए।

चरण 1: गद्यांश में प्रमाण पहचानें लेखक कहता है कि हम आगामी पीढ़ियों का भविष्य अंधकारमय करने में कोई कमी नहीं छोड़ रहे हैं। प्रकृति का दोहन और प्रदूषण बढ़ाकर मनुष्य आने वाली पीढ़ियों के जीवन का आधार कमजोर कर रहा है। धूमिल भविष्य इसी भाव को व्यक्त करता है।

चरण 2: विकल्पों की तुलना करें (A) भविष्य सँवारना और (C) भविष्य रोशन करना वास्तविक परिणाम नहीं हैं। भविष्य रोशन करने का दावा गद्यांश में झूठा अभिमान बताया गया है। (D) व्यापक तैयारी भी उसी हितकारी अर्थ की ओर जाता है, जबकि प्रश्न प्रकृति से खिलवाड़ के हानिकारक परिणाम पर केंद्रित है।

चरण 3: निष्कर्ष मनुष्य आगामी पीढ़ी का भविष्य धूमिल कर रहा है। अतः सही विकल्प (B) है।

त्वरित सुझाव: भविष्य रोशन करने के दावे को लेखक ने झूठा अभिमान कहा है; वास्तविक परिणाम अंधकारमय भविष्य है।

2(viii). मनुष्य जीवन की सार्थकता किसमें है ? [1 अंक]

(A) यांत्रिक जीवन में

(B) प्राकृतिक जीवन में

(C) नगरीय जीवन में

(D) ग्रामीण जीवन में

सही उत्तर: (B) प्राकृतिक जीवन में

हल:

अवधारणा:

- अपठित गद्यांश का उत्तर उसके कथनों और प्रसंग के आधार पर निर्धारित किया जाता है।
- सही विकल्प का अर्थ गद्यांश से मेल खाना चाहिए; अन्य विकल्पों को भी पाठ के प्रमाण से परखना चाहिए।

चरण 1: गद्यांश में प्रमाण पहचानें अंतिम अनुच्छेद में जीवन की सार्थकता भौतिकता में डूबे यांत्रिक जीवन को छोड़कर वास्तविक प्राकृतिक जीवन की शरण लेने में बताई गई है। सीमित साधनों के उपयोग से जीवन सुंदर और आनंदमय बनाने की बात इसी विचार को स्पष्ट करती है।

चरण 2: विकल्पों की तुलना करें (A) यांत्रिक जीवन वह स्थिति है जिसे छोड़ने को कहा गया है। (C) नगरीय और (D) ग्रामीण जीवन निवास-स्थान बताते हैं; लेखक ने सार्थकता को किसी स्थान तक सीमित नहीं किया है। उसका जोर प्रकृति से जुड़ी जीवन-पद्धति और संयमित साधन-उपयोग पर है।

चरण 3: निष्कर्ष मनुष्य जीवन की सार्थकता प्राकृतिक जीवन में है। अतः सही विकल्प (B) है।

त्वरित सुझाव: सार्थकता वाले अंतिम अनुच्छेद को पढ़ें; यहाँ निवास-स्थान के बजाय जीवन की प्राकृतिक पद्धति पूछी गई है।

2(x). उपर्युक्त गद्यांश में लेखक की चिंता का विषय है : [1 अंक]

(A) मनुष्य की भौतिक साधनों पर बढ़ती निर्भरता

(B) मनुष्य और प्रकृति के बीच का बढ़ता असंतुलन

(C) मनुष्य का प्रकृति से विमुख होना

(D) मनुष्य का स्क्रीन पर समय बिताना

सही उत्तर: (B) मनुष्य और प्रकृति के बीच का बढ़ता असंतुलन

हल:

अवधारणा:

- अपठित गद्यांश का उत्तर उसके कथनों और प्रसंग के आधार पर निर्धारित किया जाता है।
- सही विकल्प का अर्थ गद्यांश से मेल खाना चाहिए; अन्य विकल्पों को भी पाठ के प्रमाण से परखना चाहिए।

चरण 1: गद्यांश में प्रमाण पहचानें गद्यांश मनुष्य और प्रकृति के गहरे संबंध से आरंभ होकर जंगलों की कटाई, जल और वायु प्रदूषण तथा आगामी पीढ़ी के संकट की चर्चा करता है। अंत में प्राकृतिक जीवन और सीमित साधन-उपयोग का उपाय देता है। इन सभी विचारों को मानव-प्रकृति संबंध का बिगड़ता संतुलन जोड़ता है।

चरण 2: विकल्पों की तुलना करें (A) भौतिक साधनों पर निर्भरता तथा (C) प्रकृति से विमुखता इस व्यापक चिंता के अंग हैं। (D) स्क्रीन पर समय बिताना एक सीमित प्रसंग है। ये विकल्प पूरे गद्यांश की चिंता को समेटते नहीं हैं। (B) कारणों, दुष्परिणामों और समाधान, तीनों के केंद्र को व्यक्त करता है।

चरण 3: निष्कर्ष लेखक की चिंता मनुष्य और प्रकृति के बीच बढ़ता असंतुलन है। अतः सही विकल्प (B) है।

त्वरित सुझाव: केंद्रीय भाव के लिए ऐसा विकल्प चुनें जिसमें प्रदूषण, संसाधन-दोहन और प्राकृतिक जीवन का उपाय सभी समा जाएँ।

3(i). निम्नलिखित में से समाचार-पत्र की आवाज़ किसे माना जाता है ? [1 अंक]

(A) स्तंभ लेख

(B) फ़ीचर

(C) विशेष लेख

(D) संपादकीय

सही उत्तर: (D) संपादकीय

हल:

अवधारणा:

- संपादकीय समाचार-पत्र के विचार और नीति का प्रतिनिधित्व करता है।
- विकल्प का चयन प्रसंग के सटीक अर्थ और अन्य विकल्पों की जाँच के आधार पर किया जाता है।

चरण 1: समाचार-पत्र की आवाज़ संपादकीय किसी समसामयिक विषय पर समाचार-पत्र का संस्थागत मत प्रस्तुत करता है। उसमें समस्या का विश्लेषण, पक्षों की समीक्षा और पत्र की अपनी दृष्टि व्यक्त होती है। इसलिए उसे समाचार-पत्र की आवाज़ माना जाता है।

चरण 2: अन्य विकल्पों की जाँच स्तंभ लेख प्रायः किसी लेखक का व्यक्तिगत दृष्टिकोण देता है। फ़ीचर किसी विषय का रोचक और मानवीय प्रस्तुतीकरण है। विशेष लेख किसी विषय की विस्तृत विवेचना करता है; ये संपादकीय की तरह पत्र का आधिकारिक मत व्यक्त करने के लिए निर्धारित नहीं हैं।

चरण 3: निष्कर्ष सही उत्तर (D) है–संपादकीय।

त्वरित सुझाव: आवाज़ या संस्थागत मत पूछा जाए तो समाचार-पत्र की संपादकीय नीति से उसका संबंध पहचानें।

3(ii). पत्रकारीय लेखन के संदर्भ में निम्नलिखित में से कच्चा माल किससे प्राप्त होता है ? [1 अंक]

(A) संपादकीय से

(B) फ़ीचर से

(C) साक्षात्कार से

(D) स्तंभ लेख से

सही उत्तर: (C) साक्षात्कार से

हल:

अवधारणा:

- साक्षात्कार से प्रत्यक्ष तथ्य, अनुभव और विचार एकत्र किए जाते हैं।
- विकल्प का चयन प्रसंग के सटीक अर्थ और अन्य विकल्पों की जाँच के आधार पर किया जाता है।

चरण 1: कच्चे माल की पहचान पत्रकार को लेखन से पहले सूचना, तथ्य और संबंधित व्यक्तियों की प्रतिक्रियाएँ चाहिए। साक्षात्कार में प्रश्न पूछकर ये जानकारियाँ प्राप्त की जाती हैं। इस सामग्री को छाँटकर और जाँचकर समाचार या अन्य पत्रकारितात्मक रचना तैयार की जाती है।

चरण 2: अन्य विकल्पों की जाँच संपादकीय प्राप्त सामग्री का विश्लेषण करके लिखा गया मत है। फ़ीचर तथ्यों का रोचक रूपांतरण है और स्तंभ लेख किसी लेखक का नियमित विचारात्मक लेखन है। ये तैयार लेखन-रूप हैं; प्रश्न सामग्री जुटाने की विधि के बारे में है।

चरण 3: निष्कर्ष सही उत्तर (C) है–साक्षात्कार से।

त्वरित सुझाव: कच्चा माल पूछे जाने पर सूचना जुटाने की प्रक्रिया और तैयार पत्रकारितात्मक रचना में अंतर करें।

3(iii). रेडियो समाचार की भाषा शैली किस प्रकार की होनी चाहिए ? [1 अंक]

(A) मुहावरेदार आम बोलचाल की भाषा

(B) समाचार वाचक के लिए सहज पठनीय भाषा

(C) तत्सम शब्द प्रधान भाषा

(D) आम बोलचाल की भाषा

सही उत्तर: (D) आम बोलचाल की भाषा

हल:

अवधारणा:

- रेडियो श्रव्य माध्यम है; समाचार सुनते ही समझ में आना चाहिए।
- विकल्प का चयन प्रसंग के सटीक अर्थ और अन्य विकल्पों की जाँच के आधार पर किया जाता है।

चरण 1: श्रोता की आवश्यकता रेडियो पर श्रोता समाचार सुनता है और छपे पाठ की तरह उसे दोबारा पढ़ नहीं सकता। इसलिए समाचार की भाषा सरल, स्पष्ट और आम बोलचाल की होनी चाहिए। परिचित शब्द और छोटे, सहज वाक्य सुनते ही अर्थ ग्रहण करने में सहायता करते हैं।

चरण 2: अन्य विकल्पों की जाँच मुहावरेदार भाषा को अनिवार्य मानना उचित नहीं, क्योंकि मुहावरों की अधिकता अर्थ अस्पष्ट कर सकती है। केवल समाचार-वाचक के लिए सहज पठनीय होना पर्याप्त नहीं; श्रोता को भी तुरंत समझना चाहिए। तत्सम शब्दों की प्रधानता भाषा को कठिन बना सकती है।

चरण 3: निष्कर्ष सही उत्तर (D) है–आम बोलचाल की भाषा।

त्वरित सुझाव: रेडियो की भाषा चुनते समय ध्यान रखें कि समाचार पहली बार सुनने वाला श्रोता भी उसे तुरंत समझ सके।

3(iv). हिंदी नेट संसार के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों को ध्यान से पढ़िए :

I. हिंदी की वेब पत्रकारिता अभी अपने शैशव काल में है।

II. माइक्रोसॉफ्ट और वेबदुनिया ने यूनिकाड फ़ॉन्ट बनाए हैं।

III. सभी सरकारी अनुभागों में हिंदी में काम हो रहा है।

ऊपर वर्णित कथनों में से कौन-सा/कौन-से सही है/हैं ? [1 अंक]

(A) I और III

(B) II और III

(C) I और II

(D) केवल III

सही उत्तर: (C) I और II

हल:

अवधारणा:

- कथनों का मूल्यांकन पाठ में वर्णित हिंदी नेट संसार की स्थिति के संदर्भ में करना चाहिए।
- विकल्प का चयन प्रसंग के सटीक अर्थ और अन्य विकल्पों की जाँच के आधार पर किया जाता है।

चरण 1: पहले दो कथनों का परीक्षण पाठ्य-संदर्भ में हिंदी वेब पत्रकारिता को विकास की प्रारंभिक अवस्था में बताया गया है; इसलिए कथन I सही है। हिंदी में कंप्यूटर और इंटरनेट पर काम सुगम बनाने में माइक्रोसॉफ्ट तथा वेबदुनिया द्वारा यूनिकोड फ़ॉन्ट तैयार करने का उल्लेख है; अत: कथन II भी सही है।

चरण 2: अन्य विकल्पों की जाँच कथन III में सभी सरकारी अनुभागों में हिंदी में काम होने का सर्वसमावेशी दावा किया गया है, जो

इस संदर्भ में सही नहीं है। इसलिए III वाले विकल्प (A), (B) और (D) स्वीकार नहीं होते। I और II का संयोजन ही सही है।

चरण 3: निष्कर्ष सही उत्तर (C) है–I और II।

त्वरित सुझाव: ऐसे कथनों में सभी जैसे पूर्ण दावे जाँचें और फिर सही कथनों के संयोजन से विकल्प चुनें।

3(v). कॉलम 'क' का कॉलम 'ख' से उचित मिलान कीजिए :

	कॉलम 'क'		कॉलम 'ख'
A.	मुद्रित माध्यम	I.	मौसम
B.	फ़ीचर	II.	डेडलाइन
C.	टेलीविज़न	III.	250 – 2000 शब्द-सीमा
D.	आर्द्रता	IV.	एक रेखीय माध्यम

[1 अंक]

(A) A-IV, B-I, C-II, D-III

(B) A-II, B-III, C-IV, D-I

(C) A-III, B-IV, C-I, D-II

(D) A-I, B-III, C-II, D-IV

सही उत्तर: (B) A-II, B-III, C-IV, D-I

हल:

अवधारणा:

- माध्यम की कार्यप्रणाली और पत्रकारितात्मक रूप की विशेषता से उचित जोड़ा बनता है।
- विकल्प का चयन प्रसंग के सटीक अर्थ और अन्य विकल्पों की जाँच के आधार पर किया जाता है।

चरण 1: चारों जोड़ बनाना मुद्रित माध्यम में सामग्री निर्धारित समय तक तैयार करनी होती है, इसलिए A का मिलान II अर्थात डेडलाइन से होगा। फ़ीचर की शब्द-सीमा 250–2000 शब्द दी गई है, इसलिए B का मिलान III से है। टेलीविज़न एक रेखीय माध्यम है, अतः C का मिलान IV से होगा। आर्द्रता मौसम की स्थिति का अंग है, इसलिए D का मिलान I से है।

चरण 2: अन्य विकल्पों की जाँच इस प्रकार क्रम A-II, B-III, C-IV, D-I बनता है। विकल्प (A) मुद्रित माध्यम को एक रेखीय और आर्द्रता को शब्द-सीमा से जोड़ता है। (C) और (D) भी माध्यमों तथा मौसम के संबंध उलटते हैं। चारों सही जोड़ केवल विकल्प (B) में हैं।

चरण 3: निष्कर्ष सही उत्तर (B) है–A-II, B-III, C-IV, D-I।

त्वरित सुझाव: पहले आर्द्रता–मौसम जैसा निश्चित जोड़ा खोजें, फिर शेष तीन जोड़ मिलाकर पूरे विकल्प की जाँच करें।

---

4. छोटा मेरा खेत चौकोना
कागज़ का एक पन्ना,
कोई अंधड़ कहीं से आया
क्षण का बीज वहाँ बोया गया।
कल्पना के रसायनों को पी
बीज गल गया निःशेष;
शब्द के अंकुर फूटे,
पल्लव पुष्पों से नमित हुआ विशेष। [5 अंक]

4(i). काव्यांश में प्रयुक्त 'अंधड़' शब्द किसका प्रतीक है ? [1 अंक]

(A) तूफ़ान
(B) भावनात्मक आँधी
(C) वास्तविक आँधी
(D) चक्रवात

सही उत्तर: (B) भावनात्मक आँधी

हल:

अवधारणा:

- काव्यांश में खेती के बिंबों से कविता की रचना-प्रक्रिया समझाई गई है।
- विकल्प का चयन प्रसंग के सटीक अर्थ और अन्य विकल्पों की जाँच के आधार पर किया जाता है।

चरण 1: अंधड़ का संदर्भ कवि का खेत कागज़ का पन्ना है और उसमें बोया जाने वाला बीज किसी क्षण का विचार है। इस रूपक में अंधड़ कवि के भीतर उठने वाली भावनात्मक हलचल या प्रेरणा का प्रतीक है। इसी तीव्र अनुभूति से रचना का आरंभ होता है और कल्पना उसे कविता में विकसित करती है।

चरण 2: अन्य विकल्पों की जाँच तूफान, वास्तविक आँधी और चक्रवात मौसम संबंधी घटनाएँ हैं। यहाँ बाहरी मौसम का वर्णन नहीं, मन में उत्पन्न सृजनात्मक आवेग का संकेत है। इसलिए विकल्प (A), (C) और (D) काव्यांश के प्रतीकात्मक आशय को नहीं बताते।

चरण 3: निष्कर्ष सही उत्तर (B) है–भावनात्मक आँधी।

त्वरित सुझाव: प्रतीक का अर्थ निकालते समय उसके आसपास के कागज़, बीज और शब्द जैसे बिंबों को एक साथ जोड़ें।

4(ii). यहाँ कवि किस खेत के विषय में बात कर रहा है ? [1 अंक]

(A) ईख के खेत के विषय में
(B) चौकोर खेत के विषय में
(C) कागज़ के पन्ने रूपी खेत के विषय में
(D) धान के खेत के विषय में

सही उत्तर: (C) कागज़ के पन्ने रूपी खेत के विषय में

हल:

अवधारणा:

- कवि कागज़ और खेती के बीच समानता स्थापित करके सृजन की प्रक्रिया बताता है।
- विकल्प का चयन प्रसंग के सटीक अर्थ और अन्य विकल्पों की जाँच के आधार पर किया जाता है।

चरण 1: पंक्ति से अर्थ स्पष्ट करना काव्यांश की आरंभिक पंक्तियाँ हैं– 'छोटा मेरा खेत चौकोना / कागज़ का एक पन्ना'। इनसे स्पष्ट है कि यहाँ खेत का आशय लिखने के कागज़ से है। उस पर विचार का बीज पड़ता है और कल्पना के प्रभाव से शब्दों के अंकुर विकसित होते हैं।

चरण 2: अन्य विकल्पों की जाँच ईख और धान के खेत वास्तविक कृषि से संबंधित हैं, जबकि प्रसंग साहित्य-सृजन का है। चौकोर खेत वाला विकल्प केवल आकार बताता है और कागज़ के पन्ने का रूपक छोड़ देता है। अतः (A), (B) और (D) की अपेक्षा (C) सटीक अर्थ देता है।

चरण 3: निष्कर्ष सही उत्तर (C) है–कागज़ के पन्ने रूपी खेत के विषय में।

त्वरित सुझाव: रूपक का आधार पहचानने के लिए कविता की उस पंक्ति को खोजें जहाँ कवि स्वयं दोनों वस्तुओं को जोड़ता है।

4(iii). कवि ने अपने खेत में किस बीज की बुआई की ? [1 अंक]

(A) फ़सलों के बीज की

(B) विचारों के बीज की

(C) व्यवहार के बीज की

(D) अन्न के बीज की

सही उत्तर: (B) विचारों के बीज की

हल:

अवधारणा:

- काव्यांश में बीज का रूपक उस मूल अनुभूति या विचार के लिए आया है जिससे रचना बनती है।
- विकल्प का चयन प्रसंग के सटीक अर्थ और अन्य विकल्पों की जाँच के आधार पर किया जाता है।

चरण 1: बीज से शब्द तक का क्रम कवि कहता है कि क्षण का बीज बोया गया और कल्पना के रसायनों को पीकर उससे शब्दों के अंकुर फूटे। यह क्रम बताता है कि किसी क्षण का विचार या अनुभूति कागज़ पर कविता बनने की शुरुआत करती है। इसलिए बोया गया बीज विचारों का है।

चरण 2: अन्य विकल्पों की जाँच फ़सलों और अन्न के बीज वास्तविक खेती की वस्तुएँ हैं, पर यहाँ कागज़ पर शब्द उगने की बात है। व्यवहार का बीज भी इस प्रसंग में रचना की मूल प्रेरणा नहीं बताता। अतः (A), (C) और (D) छोड़कर विचारों के बीज वाला विकल्प चुना जाएगा।

चरण 3: निष्कर्ष सही उत्तर (B) है–विचारों के बीज की।

त्वरित सुझाव: बीज का प्रतीक समझने के लिए देखें कि उससे क्या जन्मता है; यहाँ शब्द निकलते हैं, इसलिए स्रोत विचार है।

4(iv). 'नमित' शब्द का अर्थ निम्नलिखित में से क्या है ? [1 अंक]

(A) झुका हुआ

(B) नामित किया हुआ

(C) भ्रमित किया हुआ

(D) गिरा हुआ

सही उत्तर: (A) झुका हुआ

हल:

अवधारणा:

- शब्द का सही अर्थ उसके काव्यगत संदर्भ और प्रचलित अर्थ से निश्चित होता है।
- विकल्प का चयन प्रसंग के सटीक अर्थ और अन्य विकल्पों की जाँच के आधार पर किया जाता है।

चरण 1: नमित का प्रसंग 'नमित' का अर्थ झुका हुआ है। पंक्ति 'पल्लव पुष्पों से नमित हुआ विशेष' में पत्तियों और फूलों से लदी हुई रचना की समृद्धि का बिंब है। जैसे विकसित पौधा पल्लव और फूलों के कारण झुक जाता है, वैसे ही कविता भाव और सौंदर्य से भर जाती है।

चरण 2: अन्य विकल्पों की जाँच नामित किया हुआ का अर्थ नाम दिया गया या चुना गया होता है; यह नमित का अर्थ नहीं है। भ्रमित किया हुआ मानसिक उलझन बताता है। गिरा हुआ नीचे गिर जाने का भाव देता है, जबकि नमित में झुकाव का भाव है। इसलिए (B), (C) और (D) यहाँ अनुचित हैं।

चरण 3: निष्कर्ष सही उत्तर (A) है–झुका हुआ।

त्वरित सुझाव: नमित को नमन से जोड़कर याद रखें; दोनों में झुकने का भाव है, नाम रखने या गिरने का नहीं।

4(v). उपर्युक्त काव्यांश के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों में से असत्य कथन कौन-सा है ? [1 अंक]

(A) कल्पना के रसायनों से बीज बेअसर रहता है।

(B) कल्पना के रसायनों से बीज विकसित होता है।

(C) साहित्यिक कृति भावनाओं रूपी बीजों के विगलित होने का परिणाम है।

(D) छोटा मेरा खेत कविता में कवि कर्म के हर चरण को व्याख्यायित करता है।

सही उत्तर: (A) कल्पना के रसायनों से बीज बेअसर रहता है।

हल:

अवधारणा:

- रचना में अनुभूति के बीज का कल्पना के प्रभाव से शब्दों में रूपांतरण होता है।
- उत्तर चुनते समय प्रश्न के शब्द और दिए गए पाठ का प्रमाण साथ देखें।

चरण 1: असत्य कथन पहचानें प्रश्न में असत्य कथन पूछा गया है। कविता में बीज कल्पना के रसायनों को पीकर गल जाता है और उससे शब्दों के अंकुर फूटते हैं। इसलिए कल्पना उसे बेअसर नहीं छोड़ती; वह रचना के विकास में सक्रिय भूमिका निभाती है।

चरण 2: विकल्पों को काव्यांश से मिलाएँ (A) इस विकास का निषेध करता है, इसलिए असत्य है। (B) में बीज के विकास का भाव सही है। (C) अनुभूति के रचना में बदलने को बताता है। (D) बीज बोने से पल्लव-पुष्प आने तक वर्णित कवि-कर्म की प्रक्रिया के अनुरूप है।

चरण 3: निष्कर्ष कल्पना के रसायनों से बीज बेअसर रहता है। अतः सही विकल्प (A) है।

त्वरित सुझाव: असत्य पूछे जाने पर पहले उस कथन को छाँटें जो शब्दों के अंकुर फूटने की प्रक्रिया से उलटा हो।

5. सेवक-धर्म में हनुमान जी से स्पर्द्धा करने वाली भक्तिन किसी अंजना की पुत्री न होकर एक अनामधन्या गोपालिका की कन्या — नाम है लछमिन अर्थात् लक्ष्मी। पर जैसे मेरे नाम की विशालता मेरे लिए दुर्वह है, वैसे ही लक्ष्मी की समृद्धि भक्तिन के कपाल की कुंचित रेखाओं में नहीं बँध सकी। वैसे तो जीवन में प्राय: सभी को अपने-अपने नाम का विरोधाभास लेकर जीना पड़ता है; पर भक्तिन बहुत समझदार है, क्योंकि वह अपना समृद्धि-सूचक नाम किसी को बताती नहीं। केवल जब नौकरी की खोज में आई थी, तब ईमानदारी का परिचय देने के लिए उसने शेष इतिवृत्त के साथ यह भी बता दिया; पर इस प्रार्थना के साथ कि मैं कभी नाम का उपयोग न करूँ। [5 अंक]

5(i). गद्यांश में भक्तिन को हनुमान जी से सेवक-धर्म में स्पर्द्धा करने वाली कहने का आशय है : [1 अंक]

(A) राम की भक्ति में सतत लीन रहना

(B) महादेवी जी द्वारा उसका भक्तिन नाम दिया जाना

(C) महादेवी जी के जीवन में सेवाभाव से छा जाना

(D) महादेवी जी के सभी आदेशों का पालन करना

सही उत्तर: (C) महादेवी जी के जीवन में सेवाभाव से छा जाना

हल:

अवधारणा:

- उपमा में समानता का आधार पहचानकर उसका प्रसंगानुकूल अर्थ समझना चाहिए।
- उत्तर चुनते समय प्रश्न के शब्द और दिए गए पाठ का प्रमाण साथ देखें।

चरण 1: तुलना का आधार पहचानें हनुमान जी से तुलना का आधार सेवक-धर्म है। इससे भक्तिन की निष्ठा और समर्पण की तीव्रता स्पष्ट होती है। वह अपने सेवा-भाव से लेखिका के जीवन में गहराई तक स्थान बना लेती है।

चरण 2: अन्य अर्थों को अलग करें (A) राम-भक्ति का शाब्दिक अर्थ लेता है, जबकि तुलना सेवा की है। (B) केवल नामकरण बताता है। (D) सभी आदेश मानने तक अर्थ सीमित करता है; तुलना में सेवा का व्यापक आत्मीय समर्पण व्यक्त है। इसलिए (C) सबसे उपयुक्त है।

चरण 3: निष्कर्ष महादेवी जी के जीवन में सेवाभाव से छा जाना। अत: सही विकल्प (C) है।

त्वरित सुझाव: उपमा में व्यक्ति का पूरा जीवन नहीं, प्रसंग में स्पष्ट किया गया सेवक-धर्म तुलना का आधार मानें।

5(ii). गद्यांश में 'मेरे नाम' शब्द से किसकी ओर संकेत किया गया है ? [1 अंक]

(A) लेखिका महाश्वेता देवी

(B) लेखिका महेश्वरी देवी

(C) लेखिका सरस्वती देवी

(D) लेखिका महादेवी

सही उत्तर: (D) लेखिका महादेवी

हल:

अवधारणा:

- आत्मकथात्मक कथन में सर्वनाम का संदर्भ वक्ता तथा पाठ के लेखक से निर्धारित होता है।
- उत्तर चुनते समय प्रश्न के शब्द और दिए गए पाठ का प्रमाण साथ देखें।

चरण 1: वक्ता का संदर्भ देखें गद्यांश में लेखिका भक्तिन के लक्ष्मी नाम और अपनी संज्ञा की विशालता का तुलनात्मक उल्लेख करती हैं। यहाँ प्रथम पुरुष में प्रयुक्त मेरे शब्द से स्वयं कथन करने वाली लेखिका का बोध होता है।

चरण 2: लेखिका का नाम पहचानें भक्तिन की लेखिका महादेवी वर्मा हैं; इसलिए मेरे नाम से महादेवी की ओर संकेत है। (A) महाश्वेता देवी, (B) महेश्वरी देवी और (C) सरस्वती देवी इस पाठ की कथावाचक नहीं हैं। समान या मिलते-जुलते नाम संदर्भ नहीं बदलते।

चरण 3: निष्कर्ष लेखिका महादेवी की ओर संकेत किया गया है। अतः सही विकल्प (D) है।

त्वरित सुझाव: मेरे जैसे प्रथम पुरुष सर्वनाम का अर्थ निकालते समय पहले पाठ की कथावाचक लेखिका का नाम याद करें।

5(iii). निम्नलिखित कथन-कारण को ध्यानपूर्वक पढ़िए और उसके बाद दिए गए विकल्पों में से कोई एक सही विकल्प चुनकर लिखिए।
कथन (A) : भक्तिन अपने वास्तविक नाम का विरोधाभास लेकर जी रही है।
कारण (R) : अधिकांश लोगों के नाम और जीवन में समानता नहीं होती है। [1 अंक]

(A) कथन (A) तथा कारण (R) दोनों ग़लत हैं।
(B) कथन (A) सही है, लेकिन कारण (R) कथन (A) की ग़लत व्याख्या करता है।
(C) कथन (A) तथा कारण (R) दोनों सही हैं तथा कारण (R), कथन (A) की सही व्याख्या करता है।
(D) कथन (A) ग़लत है, लेकिन कारण (R) सही है।

सही उत्तर: (B) कथन (A) सही है, लेकिन कारण (R) कथन (A) की ग़लत व्याख्या करता है।

हल:

अवधारणा:

- कथन तथा कारण की सत्यता के साथ यह भी जाँचना चाहिए कि कारण उस विशिष्ट कथन को समझाता है या नहीं।
- उत्तर चुनते समय प्रश्न के शब्द और दिए गए पाठ का प्रमाण साथ देखें।

चरण 1: कथन की सत्यता जाँचें भक्तिन का नाम लक्ष्मी है, जो समृद्धि का सूचक है। उसके जीवन में वह समृद्धि नहीं है। इसलिए उसके वास्तविक नाम और जीवन में विरोधाभास होने का कथन सही है।

चरण 2: कारण की सत्यता जाँचें गद्यांश में प्रायः सभी लोगों के अपने नाम का विरोधाभास लेकर जीने की बात कही गई है। इसलिए अधिकांश लोगों के नाम और जीवन में समानता न होने का कारण भी पाठ के सामान्य कथन के अनुरूप सही है।

चरण 3: व्याख्या का संबंध परखें अधिकांश लोगों के जीवन का सामान्य अनुभव भक्तिन की विशेष स्थिति का कारण नहीं है। उसके मामले में विरोधाभास लक्ष्मी नाम की समृद्धि और वास्तविक गरीबी के बीच है। इसलिए कारण कथन की सही व्याख्या नहीं करता। (A) दोनों को और (D) कथन को गलत बताते हैं; (C) व्याख्या का संबंध गलत जोड़ता है।

चरण 4: निष्कर्ष कथन सही है, लेकिन दिया गया कारण उसकी सही व्याख्या नहीं करता। अतः सही विकल्प (B) है।

त्वरित सुझाव: सामान्य कथन की सत्यता और किसी विशेष घटना की व्याख्या करने की क्षमता को अलग-अलग परखें।

5(iv). उपर्युक्त गद्यांश के आधार पर निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए :

I. भक्तिन महादेवी जी की सेवा में सदैव तत्पर रहती थी।

II. लक्ष्मी की समृद्धि भक्तिन के कपाल की कुंचित रेखाओं में नहीं थी।

III. भक्तिन ने अपना असली नाम महादेवी जी से छिपाया था।

IV. संसार में सभी को प्राय: अपने-अपने नाम का विरोधाभास लेकर जीना पड़ता था।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/कौन-से कथन सही है/हैं ? [1 अंक]

(A) केवल IV

(B) केवल II

(C) I, III और IV

(D) I, II और IV

सही उत्तर: (D) I, II और IV

हल:

अवधारणा:

- संयुक्त विकल्प में प्रत्येक कथन की सत्यता स्वतंत्र रूप से पाठ से मिलानी चाहिए।
- उत्तर चुनते समय प्रश्न के शब्द और दिए गए पाठ का प्रमाण साथ देखें।

चरण 1: सही कथनों का आधार देखें सेवक-धर्म में हनुमान जी से तुलना भक्तिन की सेवा में तत्परता बताती है, इसलिए I सही है। लक्ष्मी की समृद्धि उसके भाग्य में नहीं बँध सकी, इसलिए II सही है। प्राय: सबके नाम और जीवन के विरोधाभास का उल्लेख IV को सही सिद्ध करता है।

चरण 2: तीसरे कथन की जाँच करें भक्तिन ने नौकरी खोजने आते समय ईमानदारी से अपना असली नाम लेखिका को बताया था। उसने केवल उस नाम का उपयोग न करने की प्रार्थना की थी। अत: III गलत है। (A) और (B) कुछ सही कथन छोड़ते हैं, जबकि (C) गलत कथन III को शामिल करता है।

चरण 3: निष्कर्ष कथन I, II और IV सही हैं। अत: सही विकल्प (D) है।

त्वरित सुझाव: नाम बताने और नाम का उपयोग न करने की प्रार्थना के अंतर से तीसरे कथन की गलती तुरंत पकड़ें।

5(v). भक्तिन ने महादेवी जी से अपने वास्तविक नाम का उपयोग न करने के लिए क्यों कहा ? [1 अंक]

(A) विगत जीवन की कटु स्मृतियों से दूर रहने के कारण

(B) नाम के विपरीत जीवन में खुशियाँ न होने के कारण

(C) नाम के विपरीत जीवन में घोर ग़रीबी होने के कारण

(D) वास्तविक नाम पसंद न होने के कारण

सही उत्तर: (C) नाम के विपरीत जीवन में घोर ग़रीबी होने के कारण

हल:

अवधारणा:

- व्यक्ति के नाम के अर्थ और वास्तविक जीवन की स्थिति के अंतर से नाम संबंधी संकोच समझा जाता है।
- उत्तर चुनते समय प्रश्न के शब्द और दिए गए पाठ का प्रमाण साथ देखें।

चरण 1: लक्ष्मी नाम का अर्थ देखें लछमिन अर्थात् लक्ष्मी समृद्धि का सूचक नाम है। किंतु गद्यांश बताता है कि लक्ष्मी की समृद्धि भक्तिन के भाग्य में नहीं आ सकी। उसकी गरीबी ही नाम और जीवन के बीच विशेष विरोधाभास है।

चरण 2: विकल्पों की तुलना करें इसलिए (C) सटीक कारण है। (A) की कटु स्मृतियों को यहाँ कारण नहीं कहा गया है। (B) खुशियों का व्यापक अभाव बताता है, जबकि पाठ का जोर आर्थिक समृद्धि पर है। (D) नाम की व्यक्तिगत नापसंदगी बताता है, जिसका उल्लेख नहीं मिलता।

चरण 3: निष्कर्ष नाम के विपरीत जीवन में घोर गरीबी होने के कारण। अतः सही विकल्प (C) है।

त्वरित सुझाव: समृद्धि-सूचक शब्द को आधार बनाएँ; इससे गरीबी वाला विकल्प सामान्य दुख या नाम की नापसंदगी से अलग दिखता है।

6(i). 'सिल्वर वैडिंग' कहानी के आधार पर लिखिए कि यशोधर बाबू छुट्टी के समय अपने मातहतों से हँसी-मजाक क्यों करते थे ?

[1 अंक]

(A) आने वाले दिन में उनसे अपना काम करवाने के लिए
(B) उनकी नज़रों में अपने-आपको उनका हितैषी सिद्ध करने के लिए
(C) दिन-भर के शुष्क व्यवहार का निराकरण करने के लिए
(D) दफ़्तर के काम की दिन-भर की थकावट मिटाने के लिए

सही उत्तर: (C) दिन-भर के शुष्क व्यवहार का निराकरण करने के लिए

हल:

अवधारणा:

- चरित्र के व्यवहार को उसके दफ्तर के वातावरण और सहकर्मियों के साथ संबंधों के संदर्भ में समझें।
- उत्तर चुनते समय प्रश्न के शब्द और दिए गए पाठ का प्रमाण साथ देखें।

चरण 1: व्यवहार का प्रसंग समझें यशोधर बाबू दफ्तर में काम के दौरान अपने मातहतों से औपचारिक और शुष्क व्यवहार रखते थे। छुट्टी के समय हँसी-मजाक करके वे दिन भर के उस रूखेपन का निराकरण करना चाहते थे, जिससे संबंध सहज बने रहें।

चरण 2: अन्य विकल्पों से अंतर करें (C) इसी उद्देश्य को सीधे व्यक्त करता है। (A) काम निकलवाने की स्वार्थपूर्ण योजना जोड़ता है। (B) हितैषी सिद्ध करने की छवि पर जोर देता है। (D) शारीरिक या मानसिक थकावट मिटाने की बात करता है। प्रसंग का केंद्र दिन भर के शुष्क व्यवहार की भरपाई है।

चरण 3: निष्कर्ष दिन-भर के शुष्क व्यवहार का निराकरण करने के लिए। अतः सही विकल्प (C) है।

त्वरित सुझाव: छुट्टी के समय के हास्य को दफ्तर में दिन भर के औपचारिक रूखेपन के साथ जोड़कर उद्देश्य पहचानें।

6(ii). "बड़े बाऊ, आपकी अपनी चूनेदानी का क्या हाल है ?" 'सिल्वर वैडिंग' कहानी से ली गई इस पंक्ति में 'चूनेदानी' से किस चट्ठा की ओर संकेत किया है ? [1 अंक]

(A) चूना रखने की डिब्बी

(B) घड़ी रखने की डिब्बी

(C) घड़ी

(D) पैन

सही उत्तर: (C) घड़ी

हल:

अवधारणा:

- हास्य या व्यंग्य में किसी वस्तु का रूप देखकर उसे दूसरी वस्तु का नाम दिया जा सकता है।
- उत्तर चुनते समय प्रश्न के शब्द और दिए गए पाठ का प्रमाण साथ देखें।

चरण 1: चूनेदानी का संदर्भ पहचानें चट्ठा यशोधर बाबू की पुरानी घड़ी पर चुटकी लेता है। चूनेदानी शब्द यहाँ उसकी घड़ी के लिए मजाक में प्रयुक्त हुआ है। सवाल में आपकी अपनी कहने से यशोधर बाबू की उसी वस्तु की ओर संकेत मिलता है।

चरण 2: शाब्दिक अर्थ से बचें (A) चूना रखने की डिब्बी शब्द का सामान्य अर्थ है, पर इस प्रसंग का संकेत नहीं। (B) घड़ी रखने की डिब्बी वस्तु को गलत पहचानता है। (D) पैन का इस संवाद से संबंध नहीं। वस्तु घड़ी ही है, जिसे हास्यपूर्ण उपनाम दिया गया है।

चरण 3: निष्कर्ष चूनेदानी से घड़ी की ओर संकेत है। अतः सही विकल्प (C) है।

त्वरित सुझाव: हँसी-मजाक वाले संवाद में शब्द का शब्दकोशीय अर्थ चुनने से पहले पात्र की जिस वस्तु पर चुटकी है उसे पहचानें।

6(iii). "जब तक बाप है तब तक मौज कर ले।" यशोधर बाबू द्वारा अपने बच्चों से यह बात किस दृष्टि से कही जाती होगी ? [1 अंक]

(A) उन पर व्यंग्य करने के लिए

(B) उनके भाग्य की सराहना करने के लिए

(C) बच्चों के सनाथ होने की प्रसन्नता व्यक्त करने के लिए

(D) मित्रों की नज़रों में ऊँचा उठने के लिए

सही उत्तर: (C) बच्चों के सनाथ होने की प्रसन्नता व्यक्त करने के लिए

हल:

अवधारणा:

- कथन में पिता के संरक्षण का भाव पहचानना।
- सही उत्तर के लिए पाठ का विशिष्ट प्रसंग निर्णायक है; केवल शब्द-साम्य पर्याप्त नहीं है।

चरण 1: सनाथ होने का संदर्भ यशोधर बाबू स्वयं बचपन में माता-पिता के स्नेह और संरक्षण से वंचित रहे थे। इसलिए बच्चों से पिता के रहते मौज करने की बात कहते समय उनके मन में इस बात का संतोष है कि उनकी संतानें अनाथ नहीं हैं और उन्हें पिता का सहारा प्राप्त है।

चरण 2: अन्य विकल्पों का परीक्षण कथन का स्वर कभी-कभी तंजिया है, इसलिए (A) आकर्षक विकल्प है। किंतु कथाकार उनकी मुस्कान से बच्चों के सनाथ होने और निश्चिंत रहने की खुशी स्पष्ट करता है; यही उनकी भीतरी दृष्टि है। (B) केवल सामान्य भाग्य-प्रशंसा है। मित्रों में प्रतिष्ठा बढ़ाना (D) इस पारिवारिक प्रसंग का उद्देश्य नहीं है।

चरण 3: निष्कर्ष बच्चों के सनाथ होने की प्रसन्नता व्यक्त करने के लिए। अतः सही विकल्प (C) है।

त्वरित सुझाव: कथन का अर्थ पात्र के अनाथ बचपन और बच्चों को मिले पिता के संरक्षण से जोड़कर देखें।

6(iv). 'सिल्वर वैडिंग' कहानी में पुत्र से गाऊन लेते समय यशोधर बाबू के हृदय को कौन-सी बात बेध गयी ? [1 अंक]

(A) पुत्र द्वारा गाऊन की कीमत बताना

(B) पुत्र द्वारा दूध लाने की बात कहना

(C) पुत्र द्वारा उनके पुलोवर का फटा हुआ कहना

(D) गाऊन के नीचे पजामा-कुर्ता पहनने को कहना

सही उत्तर: (B) पुत्र द्वारा दूध लाने की बात कहना

हल:

अवधारणा:

- उपहार के प्रसंग में पिता की भावनात्मक अपेक्षा समझना।
- सही उत्तर के लिए पाठ का विशिष्ट प्रसंग निर्णायक है; केवल शब्द-साम्य पर्याप्त नहीं है।

चरण 1: दूध लाने की बात का संदर्भ पुत्र भूषण ने ड्रेसिंग गाऊन देते हुए कहा कि यशोधर बाबू उसे पहनकर सुबह दूध लेने जा सकते हैं। यशोधर बाबू चाहते थे कि पुत्र पिता को आराम देने और स्वयं दूध लाने की बात कहता। इसलिए दूध लाने का काम पिता के जिम्मे ही मान लेने वाली बात उनके हृदय को बेध गई।

चरण 2: अन्य विकल्पों का परीक्षण गाऊन की कीमत बताना (A), पुलोवर को फटा हुआ कहना (C) और गाऊन के नीचे पजामा-कुर्ता पहनने को कहना (D) यहाँ निर्णायक चोट का कारण नहीं हैं। प्रश्न उपहार के मूल्य अथवा पहनावे की चर्चा की अपेक्षा पुत्र के व्यवहार से आहत पिता की भावना पूछता है।

चरण 3: निष्कर्ष पुत्र द्वारा दूध लाने की बात कहना। अतः सही विकल्प (B) है।

त्वरित सुझाव: गाऊन मिलने की खुशी और पुत्र से आराम देने की अपेक्षा के बीच के अंतर को याद रखें।

6(ix). 'महाकुंड का पानी रिस न सके और बाहर का अशुद्ध पानी कुंड में न आए', इसके लिए मुअनजो-दड़ो में क्या व्यवस्था की गई थी ? [1 अंक]

(A) कुंड के पानी के बंदोबस्त के लिए कुएँ की व्यवस्था की गई।

(B) कुंड के चारों तरफ पक्के कक्षों की व्यवस्था की गई।

(C) कुंड के तल और दीवारों पर ईंटों की चूने और चिरोड़ी से चिनाई की गई।

(D) कुंड के पास पक्की और ईंटों से ढकी नालियों की व्यवस्था की गई।

सही उत्तर: (C) कुंड के तल और दीवारों पर ईंटों की चूने और चिरोड़ी से चिनाई की गई।

हल:

अवधारणा:

- महाकुंड के निर्माण में जलरोधक व्यवस्था की पहचान।
- सही उत्तर के लिए पाठ का विशिष्ट प्रसंग निर्णायक है; केवल शब्द-साम्य पर्याप्त नहीं है।

चरण 1: रिसाव रोकने का उपाय महाकुंड के तल तथा दीवारों की ईंटों की चिनाई चूने और चिरोड़ी से की गई थी। इस सघन निर्माण का उद्देश्य पानी को रिसकर बाहर जाने से रोकना तथा बाहर के अशुद्ध पानी को कुंड के भीतर आने से बचाना था। प्रश्न इसी जलरोधक व्यवस्था के विषय में है।

चरण 2: अन्य व्यवस्थाओं से अंतर कुएँ की व्यवस्था (A) जल उपलब्ध कराने से संबंधित है। चारों ओर के पक्के कक्ष (B) स्नानागार के दूसरे हिस्से हैं। ढकी हुई नालियाँ (D) जल की निकासी से जुड़ी हैं। इनमें से कोई भी कुंड के तल और दीवारों को अभेद्य बनाने का सीधा उत्तर नहीं देता।

चरण 3: निष्कर्ष कुंड के तल और दीवारों पर ईंटों की चूने और चिरोड़ी से चिनाई की गई। अतः सही विकल्प (C) है।

त्वरित सुझाव: जल की उपलब्धता, निकासी और रिसाव रोकने की व्यवस्था को अलग-अलग पहचानें।

6(v). लेखक का पिता दत्ता जी राव के यहाँ से बुलावा आने की बात सुनकर तुरंत क्यों चला गया ? [1 अंक]

(A) भयभीत होकर

(B) घबराहट में

(C) सम्मान समझकर

(D) ललचाकर

सही उत्तर: (C) सम्मान समझकर

हल:

अवधारणा:

- दत्ताजी राव की सामाजिक प्रतिष्ठा और पिता की मनोवृत्ति समझना।
- सही उत्तर के लिए पाठ का विशिष्ट प्रसंग निर्णायक है; केवल शब्द-साम्य पर्याप्त नहीं है।

चरण 1: बुलावे को सम्मान मानना दत्ताजी राव गाँव के प्रतिष्ठित और प्रभावशाली व्यक्ति थे। उनका बुलावा आने पर लेखक के पिता ने इसे अपने लिए सम्मान की बात समझा और तुरंत उनके यहाँ चले गए। उनके वहाँ जाने की तत्काल प्रेरणा यही थी कि ऐसे प्रतिष्ठित व्यक्ति ने उन्हें बुलाया है।

चरण 2: अन्य विकल्पों का परीक्षण पाठ के इस प्रसंग में भयभीत होना (A) या घबराहट (B) उनके तुरंत जाने का बताया गया कारण नहीं है। किसी वस्तु या लाभ के लालच (D) का भी उल्लेख नहीं है। बाद में मिली डाँट को बुलावे के समय की प्रेरणा मान लेना प्रसंगों को मिलाना होगा।

चरण 3: निष्कर्ष सम्मान समझकर। अतः सही विकल्प (C) है।

त्वरित सुझाव: बुलावा सुनने की प्रतिक्रिया को वहाँ पहुँचने के बाद मिली डाँट से अलग रखकर उत्तर दें।

6(vi). "दत्ता जी राव ने दादा की खूब हजामत बनाई।" 'जूझ' कहानी से ली गई इस पंक्ति में 'हजामत बनाई' का क्या आशय है ? [1 अंक]

(A) खूब खातिरदारी करना

(B) दाढ़ी-मूँछ को साफ करना

(C) मारपीट करना

(D) खरी-खोटी सुनाना

सही उत्तर: (D) खरी-खोटी सुनाना

हल:

अवधारणा:

- मुहावरे का प्रसंगानुकूल लाक्षणिक अर्थ पहचानना।
- सही उत्तर के लिए पाठ का विशिष्ट प्रसंग निर्णायक है; केवल शब्द-साम्य पर्याप्त नहीं है।

चरण 1: पंक्ति के प्रसंग को समझना दत्ताजी राव लेखक के पिता के व्यवहार और लेखक को पढ़ने से रोकने की बात पर उन्हें कठोरता से समझाते तथा डाँटते हैं। इसी संदर्भ में कहा गया है कि उन्होंने दादा की खूब हजामत बनाई। यहाँ यह प्रयोग किसी वास्तविक नाई के काम के लिए नहीं हुआ है।

चरण 2: मुहावरे और विकल्पों का परीक्षण इस प्रसंग में हजामत बनाने का अर्थ खरी-खोटी सुनाना है। खातिरदारी करना (A) तो विपरीत भाव देता है। दाढ़ी-मूँछ साफ करना (B) शाब्दिक अर्थ है, जो प्रसंग में अनुपयुक्त है। मारपीट करना (C) भी सही नहीं, क्योंकि यहाँ जोर कठोर फटकार पर है।

चरण 3: निष्कर्ष खरी-खोटी सुनाना। अतः सही विकल्प (D) है।

त्वरित सुझाव: मुहावरे का अर्थ चुनने से पहले देखें कि पात्र ने वास्तव में डाँटा, मारा या सेवा की है।

6(vii). निम्नलिखित कथनों को ध्यानपूर्वक पढ़िए :

I. आनंदा के पिता गाँव में सबसे पहले कोल्हू चलाते थे।

II. सौंदलगेकर जी लेखक को गणित पढ़ाते थे।

III. लेखक को कक्षा में बसंत पाटिल का साथ मिलता है।

ऊपरवर्णित कथनों में से कौन-सा/कौन-से सही है/हैं ? [1 अंक]

(A) I और III

(B) II और III

(C) केवल I

(D) केवल III

सही उत्तर: (A) I और III

हल:

अवधारणा:

- पाठ के पात्रों और घटनाओं के आधार पर कथनों की सत्यता जाँचना।
- सही उत्तर के लिए पाठ का विशिष्ट प्रसंग निर्णायक है; केवल शब्द-साम्य पर्याप्त नहीं है।

चरण 1: कथन I और II की जाँच कथन I सही है। लेखक के पिता अच्छी कीमत पाने के लिए गाँव में सबसे पहले कोल्हू चलाते थे। कथन II गलत है, क्योंकि सौंदलगेकर जी लेखक को गणित नहीं, मराठी पढ़ाते थे। उनकी कविता पढ़ाने की शैली से लेखक की काव्य-रुचि विकसित होती है।

चरण 2: कथन III और विकल्पों की जाँच कथन III सही है। कक्षा में लेखक को पढ़ाई में रुचि रखने वाले बसंत पाटिल का साथ मिलता है। इस प्रकार I और III का युग्म सही है। (B) में गलत कथन II शामिल है। (C) सही कथन III को और (D) सही कथन I को छोड़ देता है, इसलिए दोनों अधूरे हैं।

चरण 3: निष्कर्ष I और III सही हैं। अतः सही विकल्प (A) है।

त्वरित सुझाव: कथनों वाले प्रश्न में प्रत्येक कथन को अलग सही या गलत ठहराकर ही उनका युग्म चुनें।

6(viii). मुअनजो-दड़ो के घरों में टहलते हुए लेखक को अनायास ही कौन-सा गाँव याद आ गया ? [1 अंक]

(A) चंडीगढ़

(B) राजगढ़

(C) कुलधरा

(D) मरुधरा

सही उत्तर: (C) कुलधरा

हल:

अवधारणा:

- यात्रावृत्तांत में स्थान-स्मृति के संबंध की पहचान।
- सही उत्तर के लिए पाठ का विशिष्ट प्रसंग निर्णायक है; केवल शब्द-साम्य पर्याप्त नहीं है।

चरण 1: लेखक को याद आया गाँव मुअनजो-दड़ो के घरों में घूमते हुए लेखक को अनायास राजस्थान का कुलधरा गाँव याद आता है। वहाँ के उजड़े घरों और सुनसान बस्ती की स्मृति मुअनजो-दड़ो के पुरातात्त्विक अवशेषों को देखते समय उभरती है। प्रश्न इसी विशिष्ट स्थान का नाम पूछता है।

चरण 2: अन्य विकल्पों का परीक्षण चंडीगढ़ (A) इस प्रसंग में याद किया गया गाँव नहीं है। राजगढ़ (B) का नाम भी इस तुलना में नहीं आता। मरुधरा (D) राजस्थान के लिए प्रयुक्त व्यापक नाम है, जबकि प्रश्न किसी विशिष्ट गाँव के विषय में है। पाठ में उल्लिखित कुलधरा ही सटीक उत्तर है।

चरण 3: निष्कर्ष कुलधरा। अतः सही विकल्प (C) है।

त्वरित सुझाव: स्थान-नाम याद करते समय कुलधरा की उजड़ी बस्ती को मुअनजो-दड़ो के घरों से जोड़ें।

6(x). 'सिंधु घाटी मैदान की संस्कृति थी, पर पूरा मुअनजो-दड़ो छोटे-मोटे टीलों पर आबाद था।' क्यों ? [1 अंक]

(A) सिंधु घाटी सभ्यता की सुरक्षा के कारण

(B) सिंधु नदी के किनारे बसा होने के कारण

(C) सिंधु घाटी सभ्यता के अद्वितीय वास्तुकौशल को स्थापित करने के लिए

(D) बाढ़ के समय सिंधु नदी के प्रकोप से बचने के लिए

सही उत्तर: (D) बाढ़ के समय सिंधु नदी के प्रकोप से बचने के लिए

हल:

अवधारणा:

- प्राचीन नगर के निर्माण और प्राकृतिक परिस्थिति का संबंध समझना।
- सही उत्तर के लिए पाठ का विशिष्ट प्रसंग निर्णायक है; केवल शब्द-साम्य पर्याप्त नहीं है।

चरण 1: ऊँचे टीलों पर बसावट का कारण सिंधु घाटी मैदान की संस्कृति थी, फिर भी मुअनजो-दड़ो की बसावट ऊँचे चबूतरों और छोटे-बड़े टीलों पर थी। सिंधु नदी में आने वाली बाढ़ के प्रकोप से नगर को बचाने के लिए ऐसी ऊँचाई आवश्यक थी। अतः प्रश्न में मैदान और ऊँची बसावट का संबंध बाढ़ से सुरक्षा से स्पष्ट होता है।

चरण 2: अन्य विकल्पों का परीक्षण सभ्यता की सुरक्षा (A) सामान्य कथन है और विशिष्ट प्राकृतिक संकट नहीं बताता। नदी किनारे बसना (B) परिस्थिति है, पर ऊँचाई पर निर्माण का उद्देश्य नहीं बताता। अद्वितीय वास्तुकौशल स्थापित करना (C) भी इस बसावट का मूल कारण नहीं है। बाढ़ से बचाव का विकल्प सबसे स्पष्ट है।

चरण 3: निष्कर्ष बाढ़ के समय सिंधु नदी के प्रकोप से बचने के लिए। अतः सही विकल्प (D) है।

त्वरित सुझाव: टीलों पर बसावट के प्रश्न में नदी की बाढ़ और भूमि की ऊँचाई का सीधा संबंध देखें।

7(क). निम्नलिखित दिए गए चार अप्रत्याशित विषयों में से किसी एक विषय पर लगभग 120 शब्दों में रचनात्मक लेख लिखिए : वर्तमान तकनीकी युग और हस्तशिल्प कलाएँ [6 अंक]

हल:

अवधारणा:

- रचनात्मक लेख विषय के किसी सजीव दृश्य या अनुभव से आरंभ होकर उसके व्यापक अर्थ तक पहुँचता है। इसमें मौलिक दृष्टि, स्पष्ट विचार और सहज भाषा का समन्वय आवश्यक है।
- इस विषय का केंद्र तकनीक और हस्तशिल्प का संबंध है। मशीन की गति तथा कारीगर के व्यक्तिगत कौशल की तुलना करते हुए तकनीक से शिल्प के संरक्षण और प्रसार की संभावनाएँ दिखानी हैं।

चरण 1: प्रारूप और विषयवस्तु की योजना ऊपर सार्थक शीर्षक दें और नीचे लगभग 120 शब्दों में सुसंगत लेख लिखें। आरंभ में कारीगर के हाथों का दृश्य, मध्य में मशीन से मिलने वाली चुनौती तथा डिजिटल माध्यमों से खुलते अवसर और अंत में परंपरा के संरक्षण का विचार रखें। यह रचनात्मक लेख है, इसलिए पत्र की तरह पता, संबोधन या हस्ताक्षर नहीं जोड़ें।

चरण 2: पूर्ण आदर्श रचनात्मक लेख **हथेलियों का हुनर, तकनीक का साथ**

दादी की संदूकची में रखा कढ़ाईदार रूमाल आज भी मशीन से बने महँगे कपड़ों से अधिक सुंदर लगता है। उसके हर धागे में किसी कारीगर का धैर्य और अपनापन बसा है। वर्तमान तकनीकी युग में मशीनें हजारों वस्तुएँ शीघ्र बना देती हैं, किंतु हस्तशिल्प की आत्मीयता नहीं रच पातीं। सस्ते मशीनी उत्पादों ने शिल्पकारों की आजीविका को चुनौती अवश्य दी है। फिर भी तकनीक उनकी प्रतिद्वंद्वी ही नहीं, सहयोगी भी बन सकती है। ऑनलाइन बाजार, डिजिटल भुगतान और सामाजिक माध्यम दूरदराज के कारीगरों को नए ग्राहकों से जोड़ते हैं। आवश्यकता है उचित प्रशिक्षण, उचित मूल्य और मौलिक डिजाइनों की सुरक्षा की। हम स्थानीय हस्तनिर्मित वस्तुएँ अपनाएँ तो परंपरा भी बचेगी और कारीगर का चूल्हा भी जलेगा। तकनीक की उँगली थामकर हस्तशिल्प भविष्य की ओर बढ़ सकता है।

चरण 3: निष्कर्ष तकनीक के विवेकपूर्ण उपयोग, कारीगरों को उचित अवसर और हस्तनिर्मित वस्तुओं के प्रति सम्मान से हस्तशिल्प कलाएँ आधुनिक युग में भी समृद्ध हो सकती हैं।

त्वरित सुझाव: लेख में एक सजीव हस्तनिर्मित वस्तु का दृश्य जोड़ें और तकनीकी चुनौती के साथ डिजिटल बाजार जैसा ठोस अवसर भी बताएँ।

7(ख). निम्नलिखित दिए गए चार अप्रत्याशित विषयों में से किसी एक विषय पर लगभग 120 शब्दों में रचनात्मक लेख लिखिए : आपसी रिश्तों में बढ़ती स्वार्थपरकता [6 अंक]

हल:

अवधारणा:

- रचनात्मक लेख में विषय से जुड़ा अनुभव, उसका सामाजिक अर्थ और लेखक की संवेदनशील दृष्टि व्यक्त होती है। प्रभावशाली लेख केवल उपदेश नहीं देता, बल्कि उदाहरण से विचार को सजीव बनाता है।
- इस विषय में स्वार्थपरकता से संबंधों में घटते विश्वास और आत्मीयता को समझाना है। धन, लाभ तथा उपयोगिता से आगे बढ़कर समय, सहानुभूति और निःस्वार्थ सहयोग का महत्व उभारना चाहिए।

चरण 1: प्रारूप और विचारों की योजना एक अर्थपूर्ण शीर्षक देकर लगभग 120 शब्दों का रचनात्मक लेख लिखें। शुरुआत परिचित जीवन के छोटे दृश्य से करें। उसके बाद लाभ पर आधारित संबंधों की समस्या और उसके प्रभाव बताएँ। अंत में सुनने, समय देने तथा बिना प्रतिफल की अपेक्षा सहायता करने जैसे व्यावहारिक उपाय रखें। लेख की भाषा सरल और भावपूर्ण हो; किसी व्यक्ति विशेष पर आक्षेप न हो। आरंभिक दृश्य को अंतिम संदेश से जोड़ें, ताकि लेख का भाव और विचार एक सूत्र में बँधे रहें।

चरण 2: पूर्ण आदर्श रचनात्मक लेख **रिश्तों में लौटे अपनापन**

मोबाइल की घंटी बजी तो माँ का चेहरा खिल उठा, पर बेटे ने केवल जरूरी कागज माँगे और फोन रख दिया। माँ की अधूरी बात कमरे में ठहर गई। आज अनेक रिश्तों में संवाद की जगह जरूरत ने ले ली है। हम मिलने से पहले लाभ और सहायता करने से पहले प्रतिफल सोचने लगे हैं। प्रतिस्पर्धा, व्यस्तता और दिखावे की दौड़ ने आत्मीयता को कमजोर किया है। संकट में साथ देने वाले हाथ कम हों तो भीड़

में भी मन अकेला रह जाता है। फिर भी परिवर्तन असंभव नहीं है। किसी अपने की बात धैर्य से सुनना, बिना काम फोन करना और कठिन समय में साथ खड़ा होना संबंधों को फिर सींच सकता है। रिश्ते हिसाब की बही नहीं, विश्वास की पूँजी हैं। उन्हें स्वार्थ से नहीं, संवेदना से बचाना होगा।

चरण 3: निष्कर्ष निःस्वार्थ सहयोग, नियमित आत्मीय संवाद और दूसरों की भावनाओं के सम्मान से रिश्तों में बढ़ती स्वार्थपरकता को कम किया जा सकता है।

त्वरित सुझाव: विषय को प्रभावी बनाने के लिए उपेक्षित रिश्ते का छोटा दृश्य लिखें, फिर भरोसा लौटाने के दो ठोस व्यवहार बताएँ।

7(ग). निम्नलिखित दिए गए चार अप्रत्याशित विषयों में से किसी एक विषय पर लगभग 120 शब्दों में रचनात्मक लेख लिखिए :
विश्व जनमत में भारत का बढ़ता दबदबा [6 अंक]

हल:

अवधारणा:

- रचनात्मक लेख में विषय का केंद्रीय भाव स्पष्ट रखते हुए विचारों को प्रभावपूर्ण और क्रमबद्ध ढंग से प्रस्तुत किया जाता है। इस विषय का केंद्र विश्व समुदाय में भारत के प्रति बढ़ता विश्वास और उसकी सक्रिय भूमिका है।
- लगभग 120 शब्दों की सीमा में एक उपयुक्त शीर्षक, संक्षिप्त भूमिका, ठोस उदाहरण और सार्थक समापन होना चाहिए। भाषा संतुलित हो; अतिशयोक्ति और अप्रमाणित आँकड़ों से बचना चाहिए।

चरण 1: रूपरेखा और विचारों का चयन लेख का आरंभ विश्व मंच पर भारत की पहचान से करें। इसके बाद लोकतंत्र, विज्ञान, विकासशील देशों के हित और संकट में सहयोग जैसे पक्ष जोड़ें। अंतिम वाक्य में प्रभाव के साथ आने वाली जिम्मेदारी तथा विश्वकल्याण की भावना रखें। यह विषय केवल आर्थिक शक्ति का वर्णन नहीं माँगता; दूसरे देशों के विश्वास और भारत की बात को मिलने वाले महत्व को भी स्पष्ट करना आवश्यक है।

चरण 2: पूर्ण आदर्श रचनात्मक लेख **विश्व जनमत में भारत का बढ़ता दबदबा**

विश्व मंच पर भारत की आवाज अब अधिक ध्यान से सुनी जाती है। विशाल लोकतंत्र, युवा प्रतिभा और वैज्ञानिक उपलब्धियों ने उसकी पहचान मजबूत की है। अंतरिक्ष अनुसंधान तथा डिजिटल सेवाओं में प्रगति भारत की क्षमता का परिचय देती है। संकट के समय दूसरे देशों तक सहायता पहुँचाकर उसने सहयोग का संदेश दिया है। विकासशील देशों की समस्याओं को सामने रखने से उनके बीच भारत के प्रति विश्वास बढ़ा है। जलवायु परिवर्तन, शांति और मानवकल्याण जैसे विषयों पर उसकी सक्रियता महत्वपूर्ण है। यह सम्मान केवल शक्ति से नहीं, जिम्मेदारी निभाने से मिलता है। भारत को अपनी विविधता, लोकतांत्रिक मूल्यों और मानवीय दृष्टि को सँजोते हुए आगे बढ़ना होगा। तभी उसका बढ़ता प्रभाव विश्व के लिए आशा का आधार बनेगा।

चरण 3: निष्कर्ष विश्व जनमत में भारत की बढ़ती प्रतिष्ठा को उसकी उपलब्धियों, सहयोग की भावना और जिम्मेदार वैश्विक भूमिका से जोड़कर लेख पूरा किया गया है।

त्वरित सुझाव: इस विषय में केवल प्रशंसा न गिनाएँ; उपलब्धि के बाद उसका विश्व में विश्वास और सम्मान पर पड़ने वाला प्रभाव भी लिखें।

7(घ). निम्नलिखित दिए गए चार अप्रत्याशित विषयों में से किसी एक विषय पर लगभग 120 शब्दों में रचनात्मक लेख लिखिए :
शीतलता बरसाता चाँद [6 अंक]

हल:

अवधारणा:

- प्रकृति पर रचनात्मक लेख में दृश्य, अनुभव और भाव का मेल आवश्यक है। चाँद की शीतलता को चाँदनी, शांत वातावरण और मन पर पड़ने वाले प्रभाव के माध्यम से व्यक्त किया जा सकता है।

- लगभग 120 शब्दों में एक स्पष्ट शीर्षक, स्वाभाविक दृश्य-वर्णन और भावपूर्ण समापन रखें। उपमा तथा मानवीकरण भाषा को सुंदर बनाते हैं, लेकिन उनका प्रयोग विषय के अनुरूप और सीमित होना चाहिए।

चरण 1: विषय की रूपरेखा तैयार करना रात के आकाश में चाँद के उदय से आरंभ करें। फिर उसकी रोशनी का छतों, पेड़ों और धरती पर पड़ता प्रभाव दिखाएँ। दृश्य के साथ दिनभर की थकान से राहत, बालमन की कल्पना और मनुष्य की शांति की आकांक्षा जोड़ें। अंत में चाँद की शीतलता से मिलने वाली जीवन-प्रेरणा लिखें। वर्णन में रोशनी और ध्वनि के छोटे संकेत दृश्य को सजीव बनाते हैं। भावों की क्रमिक गति बनाए रखें, जिससे बाहरी वातावरण से भीतरी अनुभूति तक लेख सहजता से पहुँच सके। यह एक साहित्यिक अनुभूति का विषय है, इसलिए वर्णन को वैज्ञानिक विवरण या असंबद्ध कहानी में न बदलें।

चरण 2: पूर्ण आदर्श रचनात्मक लेख **शीतलता बरसाता चाँद**

दिनभर की तपिश के बाद जब चाँद आकाश में निकलता है, तो लगता है मानो प्रकृति ने राहत की साँस ली हो। उसकी दूधिया चाँदनी छतों, पेड़ों और पगडंडियों पर चुपचाप बिछ जाती है। हवा का हलका स्पर्श और पत्तों की सरसराहट इस उजाले को और मधुर बना देते हैं। आँगन में बैठा थका मन अपनी उलझनें कुछ देर के लिए भूल जाता है। बच्चे उसमें कहानियों का संसार खोजते हैं और कवि अपने सपनों की छवि देखते हैं। चाँद का शांत सौंदर्य सिखाता है कि बिना शोर किए भी उजाला फैलाया जा सकता है। काश, हम भी अपने व्यवहार में ऐसी ही कोमलता भर सकें! तब जीवन की तपती राहों पर किसी के लिए शीतल चाँदनी बनना संभव होगा।

चरण 3: निष्कर्ष चाँदनी के दृश्य और मन की शांति को जोड़ते हुए लेख का समापन कोमल व्यवहार की जीवन-प्रेरणा से किया गया है।

त्वरित सुझाव: प्रकृति-वर्णन में कम-से-कम एक दृश्य और उसका मन पर प्रभाव जोड़ें; इससे लेख केवल विशेषणों की सूची बनने से बचता है।

8(क). निम्नलिखित तीन प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 60 शब्दों में दीजिए :

नए अथवा अप्रत्याशित विषयों पर लेखन के संबंध में किन-किन बातों पर ध्यान देना चाहिए ? [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- नए विषय पर लेखन में मौलिक दृष्टि और जीवन के अनुभव उपयोगी होते हैं।
- विचारों का चयन विषय की सीमा और निर्धारित शब्दसंख्या के अनुसार किया जाता है।

चरण 1: विषय और विचारों का चयन प्रश्न नए विषय पर लिखते समय बरती जाने वाली सावधानियाँ पूछता है। इसलिए किसी एक विषय पर रचना लिखने के स्थान पर लेखन की प्रक्रिया बतानी है। विषय का आशय समझकर अपने अनुभवों से संबंधित बिंदु चुनें और उन्हें क्रम दें।

चरण 2: उत्तर की व्याख्या रूपरेखा बनाते समय यह भी देखें कि चुना गया उदाहरण विषय से सीधे जुड़ता है या नहीं। केवल आकर्षक शब्दों के प्रयोग से रचना सार्थक नहीं बनती; अनुभव को अपनी दृष्टि से प्रस्तुत करना आवश्यक है। अंतिम पठन में दोहराव हटाएँ, वर्तनी सुधारें और अनुच्छेदों का आपसी संबंध जाँचें। इससे नए विषय पर भी विचार बिखरने नहीं पाते और पाठक लेखन का आशय आसानी से समझ लेता है।

चरण 3: संक्षिप्त उत्तर नए अथवा अप्रत्याशित विषय पर लिखते समय विषय को ध्यानपूर्वक समझना चाहिए। उससे जुड़े अनुभवों और विचारों की रूपरेखा बनाकर उन्हें तार्किक क्रम देना चाहिए। लेखन में मौलिकता, कल्पनाशीलता और रोचकता हो। भाषा सरल, स्पष्ट तथा विषयानुकूल हो। अनावश्यक विस्तार और घिसे-पिटे कथनों से बचें। निर्धारित शब्दसीमा में सुसंगठित शुरुआत, विषय-विस्तार और प्रभावपूर्ण समापन करें।

चरण 4: निष्कर्ष मौलिक विचार, तार्किक क्रम, स्पष्ट भाषा और शब्दसीमा का ध्यान रचनात्मक लेखन को प्रभावी बनाता है।

त्वरित सुझाव: पहले विषय से जुड़े तीन बिंदु लिखें; फिर उन्हें आरंभ, विस्तार और समापन के क्रम में रखें।

8(ख). निम्नलिखित तीन प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 60 शब्दों में दीजिए :

रेडियो नाटक की प्रासंगिकता पर विचार करते हुए उसकी विशेषताएँ स्पष्ट कीजिए। [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- रेडियो श्रव्य माध्यम है; इसमें दृश्य का बोध ध्वनियों के माध्यम से होता है।
- संवाद, ध्वनि-संकेत और संगीत रेडियो नाटक के प्रमुख अभिव्यक्ति-साधन हैं।

चरण 1: प्रश्न की दोनों अपेक्षाएँ उत्तर में रेडियो नाटक की उपयोगिता और उसकी विशिष्ट रचना-पद्धति, दोनों बतानी हैं। उसकी पहुँच तथा श्रोता की कल्पना को सक्रिय करने की क्षमता प्रासंगिकता के बिंदु हैं। विशेषताओं में दृश्य के अभाव, संवादों की भूमिका तथा ध्वनि-संकेतों का उल्लेख करें।

चरण 2: उत्तर की व्याख्या रेडियो नाटक में अभिनेता के चेहरे या वेशभूषा को श्रोता देख नहीं सकता। इस कारण आवाज़ के उतार-चढ़ाव से भाव और अलग-अलग आवाज़ों से पात्र पहचाने जाते हैं। दरवाज़े की दस्तक जैसी ध्वनि किसी घटना का संकेत दे सकती है। संवाद स्वाभाविक रहते हुए आवश्यक स्थिति भी स्पष्ट करें। ये बातें समझाती हैं कि रेडियो नाटक का लेखन मंचीय नाटक के दृश्य-निर्देश भर पढ़ देने से पूरा नहीं होता।

चरण 3: संक्षिप्त उत्तर रेडियो नाटक मनोरंजन और सामाजिक जागरूकता का सुलभ माध्यम है। इसे सुनते हुए अन्य काम भी किए जा सकते हैं। यह श्रोता की कल्पनाशक्ति को सक्रिय करता है। दृश्य न होने से संवाद, ध्वनि-प्रभाव और संगीत ही पात्रों, वातावरण तथा घटनाओं को साकार करते हैं। इसलिए संवाद सहज और स्पष्ट, पात्रों की संख्या सीमित तथा कथानक रोचक होना चाहिए।

चरण 4: निष्कर्ष रेडियो नाटक की उपयोगिता उसकी सुलभता में तथा विशिष्टता श्रव्य साधनों से दृश्य-जगत रचने में है।

त्वरित सुझाव: रेडियो के लिए सोचें कि आँखें बंद होने पर पात्र, स्थान और घटना की जानकारी किस ध्वनि से मिलेगी।

8(ग). निम्नलिखित तीन प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 60 शब्दों में दीजिए :

कहानी और नाटक में क्या अंतर है ? दोनों की किन्हीं तीन मुख्य विविधताओं को स्पष्ट कीजिए। [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- कहानी मुख्यत: पढ़ने की विधा है, जबकि नाटक अभिनय और मंचन से पूर्णता पाता है।
- तुलनात्मक उत्तर में समान आधार पर दोनों विधाओं की विशेषताएँ साथ रखनी चाहिए।

चरण 1: तुलना के तीन आधार प्रश्न तीन मुख्य अंतर चाहता है। अत: प्रस्तुति, कथन-शैली और समय-स्थान को आधार बनाएँ। केवल कहानी या केवल नाटक की विशेषताएँ गिनाने से तुलना पूरी नहीं होगी। प्रत्येक आधार पर दोनों विधाओं का स्वरूप स्पष्ट करना आवश्यक है।

चरण 2: उत्तर की व्याख्या कथावाचक कहानी में पात्र के मन के विचार सीधे बता सकता है। नाटककार प्राय: वही भाव पात्रों के व्यवहार, संवाद या एकालाप से प्रकट करता है। इसी प्रकार कहानी का एक वाक्य वर्षों का अंतराल पार कर सकता है, जबकि मंच पर उसके संकेत की व्यवस्था करनी पड़ती है। ये प्रवृत्तिगत अंतर हैं; कहानी में संवाद और नाटक में कथावाचन संभव होने पर भी दोनों की प्रमुख प्रस्तुति-पद्धति अलग रहती है।

चरण 3: संक्षिप्त उत्तर कहानी और नाटक में तीन प्रमुख अंतर हैं। पहला, कहानी पढ़ी या सुनी जाती है, जबकि नाटक मंच पर अभिनीत होता है। दूसरा, कहानी में कथावाचक वर्णन और मनोविश्लेषण कर सकता है; नाटक में संवाद तथा अभिनय प्रमुख होते हैं। तीसरा, कहानी में समय-स्थान का विस्तार सहज है, जबकि नाटक में मंच और अवधि की व्यावहारिक सीमाएँ रहती हैं।

चरण 4: निष्कर्ष प्रस्तुति, अभिव्यक्ति और समय-स्थान की स्वतंत्रता के आधार पर कहानी तथा नाटक में अंतर स्पष्ट होता है।

त्वरित सुझाव: तीन आधार चुनकर हर आधार पर कहानी और नाटक की विशेषता एक ही वाक्य में आमने-सामने रखें।

9(क). निम्नलिखित तीन प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 80 शब्दों में दीजिए :

दूरदर्शन पर प्रसारित होने वाले समाचारों के विभिन्न चरण कौन-कौन से हैं ? किन्हीं चार चरणों का विस्तार से उल्लेख कीजिए। [4 अंक]

हल:

अवधारणा:

- टेलीविजन में समाचार शब्द, दृश्य और ध्वनि के मेल से प्रस्तुत होता है। समाचार मिलने से विस्तृत रिपोर्ट बनने तक प्रस्तुति का रूप बदल सकता है।
- प्रस्तुति के प्रमुख रूप हैं—फ्लैश या ब्रेकिंग न्यूज़, ड्राई एंकर, फोन-इन, एंकर-विजुअल, एंकर-बाइट, लाइव और एंकर-पैकेज।

चरण 1: प्रस्तुति के चरणों को पहचानना घटना की शुरुआती सूचना फ्लैश या ब्रेकिंग न्यूज़ में आती है। दृश्य उपलब्ध न हों तो समाचार-वाचक ड्राई एंकर के रूप में सूचना पढ़ता है। फोन-इन में संवाददाता से फोन पर जानकारी ली जाती है। आगे दृश्य, संबंधित व्यक्तियों के कथन और घटनास्थल से सीधा प्रसारण जोड़ा जा सकता है। तैयार पैकेज में संपादित दृश्य, आवाज़ और विवरण एक साथ आते हैं। एंकर-विजुअल को ड्राई एंकर से अलग पहचानना आवश्यक है, क्योंकि पहले में दृश्य समाचार को पुष्ट करते हैं और दूसरे में केवल वाचन होता है।

चरण 2: लगभग 80 शब्दों में उत्तर दूरदर्शन समाचार के प्रमुख चरण हैं—फ्लैश या ब्रेकिंग न्यूज़, ड्राई एंकर, फोन-इन, एंकर-विजुअल, एंकर-बाइट, लाइव और एंकर-पैकेज। इनमें चार चरणों का विवरण इस प्रकार है। फ्लैश में बड़ी घटना की तत्काल संक्षिप्त सूचना दी जाती है। ड्राई एंकर में दृश्य उपलब्ध न होने पर समाचार-वाचक सूचना पढ़ता है। फोन-इन में संवाददाता फोन पर घटनास्थल की जानकारी देता है और एंकर के प्रश्नों के उत्तर देता है। एंकर-विजुअल में समाचार-वाचक के विवरण के साथ घटना से संबंधित दृश्य दिखाए जाते हैं, जिससे समाचार अधिक स्पष्ट और प्रभावी बनता है।

चरण 3: निष्कर्ष इस प्रकार समाचार की उपलब्ध सूचना और दृश्य-सामग्री के अनुसार उसकी प्रस्तुति तत्काल सूचना से अधिक विस्तृत दृश्यात्मक विवरण की ओर बढ़ती है।

त्वरित सुझाव: चार चरणों के नाम लिखकर प्रत्येक की पहचान बताइए—तत्काल सूचना, बिना दृश्य का वाचन, फोन से जानकारी और विवरण के साथ दृश्य।

9(ख). निम्नलिखित तीन प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 80 शब्दों में दीजिए :

समाचार लेखन के संदर्भ में छह ककार कौन-कौन से हैं ? उनके महत्त्व पर टिप्पणी कीजिए। [4 अंक]

हल:

अवधारणा:

- छह ककार समाचार के मूल प्रश्न हैं—क्या, कब, कहाँ, कौन, क्यों और कैसे। इनके उत्तर घटना का पूरा संदर्भ देते हैं।
- क्या, कब, कहाँ और कौन घटना की बुनियादी सूचना देते हैं; क्यों और कैसे उसके कारण तथा प्रक्रिया स्पष्ट करते हैं।

चरण 1: छह प्रश्नों का आशय समझना क्या से घटना का स्वरूप, कब से समय, कहाँ से स्थान और कौन से संबंधित व्यक्ति या पक्ष की पहचान होती है। क्यों घटना के कारण की पड़ताल करता है, जबकि कैसे उसके घटित होने की प्रक्रिया बताता है। समाचार में इन प्रश्नों के उत्तर तथ्य-जाँच के आधार पर दिए जाते हैं। कारण की पुष्टि न हुई हो तो अनुमान को निश्चित तथ्य की तरह नहीं लिखना चाहिए। इनका महत्त्व केवल सूचनाओं की सूची बनाने में नहीं है। समय और स्थान से घटना का संदर्भ स्पष्ट होता है; संबंधित पक्ष की पहचान से अस्पष्टता दूर होती है। कारण और प्रक्रिया पाठक को घटना की पृष्ठभूमि समझाते हैं। समाचार के आरंभ में कौन-सा तथ्य प्रमुख होगा, यह उसके समाचार-मूल्य पर निर्भर करता है।

चरण 2: लगभग 80 शब्दों में उत्तर समाचार लेखन के छह ककार हैं—क्या, कब, कहाँ, कौन, क्यों और कैसे। क्या से घटना, कब से समय, कहाँ से स्थान तथा कौन से संबंधित व्यक्ति या पक्ष का बोध होता है। क्यों घटना का कारण और कैसे उसके घटित होने का तरीका स्पष्ट करता है। इनके उत्तर समाचार को पूर्ण, स्पष्ट और सुव्यवस्थित बनाते हैं तथा पाठक की प्रमुख जिज्ञासाएँ शांत करते हैं। सामान्यतः आरंभ में महत्त्वपूर्ण तथ्य दिए जाते हैं और आगे कारण तथा प्रक्रिया का विस्तार किया जाता है। सभी विवरण तथ्यपरक होने चाहिए।

चरण 3: निष्कर्ष छह ककार समाचार की तथ्यपूर्ण और संपूर्ण प्रस्तुति का आधार हैं; वे पाठक को घटना और उसकी पृष्ठभूमि समझने में सहायता देते हैं।

त्वरित सुझाव: क्या–घटना, कब–समय, कहाँ–स्थान, कौन–व्यक्ति, क्यों–कारण और कैसे–प्रक्रिया का मिलान करके उत्तर की पूर्णता जाँचिए।

9(ग). निम्नलिखित तीन प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 80 शब्दों में दीजिए :

'विशेष लेखन' से आप क्या समझते हैं ? समाचार-पत्रों के संबंध में विशेष लेखन की उपादेयता पर प्रकाश डालिए। [4 अंक]

हल:

अवधारणा:

- विशेष लेखन किसी विशिष्ट विषय या क्षेत्र पर केंद्रित लेखन है, जिसमें सामान्य जानकारी के साथ विषय का गहरा ज्ञान और विशिष्ट शब्दावली की समझ आवश्यक होती है।
- समाचार-पत्र में विशेष लेखन का उद्देश्य केवल घटना बताना नहीं, बल्कि उसकी पृष्ठभूमि, कारण और प्रभाव समझाकर पाठक की जानकारी तथा विवेक बढ़ाना है।

चरण 1: परिभाषा और क्षेत्र पहचानें यहाँ विशेष लेखन को केवल आकर्षक शैली में लिखा गया समाचार नहीं मानना चाहिए। आर्थिक, खेल, विज्ञान, स्वास्थ्य, कृषि, शिक्षा और पर्यावरण जैसे क्षेत्रों की अपनी शब्दावली और जटिलताएँ होती हैं। इन पर प्रामाणिक और विश्लेषणपूर्ण सामग्री लिखने के लिए संबंधित विषय का अध्ययन, विश्वसनीय स्रोत तथा विशेषज्ञों से संपर्क आवश्यक है।

चरण 2: उपादेयता को पाठक की जरूरत से जोड़ें समाचार-पत्र के सभी पाठकों की रुचि और आवश्यकता समान नहीं होती। विषयगत पृष्ठ और परिशिष्ट उन्हें अपनी रुचि के क्षेत्र की उपयोगी सामग्री देते हैं। विशेष लेखन तकनीकी जानकारी को सहज बनाता है, घटनाओं का व्यापक संदर्भ समझाता है और साधारण समाचार से आगे का ज्ञान देता है। इससे पत्र की विश्वसनीयता तथा उपयोगिता भी बढ़ती है।

चरण 3: लगभग 80 शब्दों में उत्तर विशेष लेखन किसी विशिष्ट क्षेत्र या विषय पर गहन जानकारी, विशेषज्ञता और संबंधित शब्दावली की समझ के साथ किया जाने वाला लेखन है। अर्थव्यवस्था, विज्ञान, खेल, स्वास्थ्य और पर्यावरण इसके प्रमुख क्षेत्र हैं। समाचार-पत्रों में यह जटिल विषयों को सरल भाषा में समझाता तथा घटनाओं की पृष्ठभूमि, कारण और प्रभाव स्पष्ट करता है। इससे विविध रुचियों वाले पाठकों को उपयोगी और प्रामाणिक जानकारी मिलती है। विषयगत पृष्ठ तथा परिशिष्ट पाठकों की समझ बढ़ाते और पत्र को अधिक उपयोगी बनाते हैं।

चरण 4: निष्कर्ष विशेष लेखन विषयगत विशेषज्ञता को सरल प्रस्तुति से जोड़कर समाचार-पत्रों को अधिक सूचनाप्रद, विश्लेषणपूर्ण और पाठकोपयोगी बनाता है।

त्वरित सुझाव: पहले विशेष लेखन की परिभाषा दें, फिर विषयों के उदाहरण और समाचार-पत्र के पाठकों को होने वाले लाभ लिखें।

10(क). काव्य खंड पर आधारित निम्नलिखित तीन प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 60 शब्दों में दीजिए :

"कवि और कविता को समानांतर न रखकर कवि ने कविता और बच्चे को समानांतर रखा है।" 'कविता के बहाने' कविता के संदर्भ में तर्क सहित कारण स्पष्ट कीजिए। [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- कुँवर नारायण की कविता में बच्चे का खेल और कविता की कल्पना, दोनों सीमाओं से मुक्त सृजन तथा अपनत्व के प्रतीक हैं।
- कविता का अर्थ केवल कवि के निजी अनुभव तक सीमित नहीं होता; उसमें व्यापक मानवीय संभावनाएँ और दूसरों से जुड़ने की शक्ति होती है।

चरण 1: बच्चों और कविता की समानता समझें बच्चे खेलते समय ऊँच-नीच, अपने-पराए और घरों की सीमाओं का विचार नहीं करते।

कविता भी कल्पना और संवेदना के सहारे सीमित परिवेश से आगे जाती है। कविता में बच्चों के बहाने खेल और सभी घरों को एक करने की बात इसी स्वतंत्रता तथा मानवीय एकता को सामने लाती है।

चरण 2: कवि के स्थान पर बच्चे को रखने का तर्क कवि एक व्यक्ति है, जिसकी अपनी परिस्थितियाँ और अनुभव हैं। कविता की संभावनाएँ उस व्यक्ति की सीमाओं से बहुत आगे फैल सकती हैं। इसलिए कविता की तुलना केवल उसके रचयिता से करने पर उसकी व्यापकता स्पष्ट नहीं होती। बच्चे की सहज, निष्कपट और निर्बंध सृजनशीलता कविता की प्रकृति को अधिक प्रभावी ढंग से व्यक्त करती है।

चरण 3: लगभग 60 शब्दों में उत्तर कवि ने कविता और बच्चे को समानांतर रखा है क्योंकि दोनों का संसार सहज, कल्पनाशील और बंधनमुक्त है। बच्चे खेल में अपने-पराए का भेद मिटाकर सभी घरों को एक कर देते हैं। कविता भी मनुष्यों को जोड़ती और सीमाओं के पार जाती है। कवि एक व्यक्ति है, पर कविता की संभावनाएँ उससे अधिक व्यापक हैं; बच्चे की असीम सृजनशीलता इन्हीं संभावनाओं को व्यक्त करती है।

चरण 4: निष्कर्ष बच्चे की सहजता, भेदरहित अपनत्व और असीम कल्पना कविता की बंधनमुक्त सृजनशीलता के अधिक निकट हैं।

त्वरित सुझाव: उत्तर में केवल कल्पनाशीलता न लिखें; बच्चों के खेल और घरों को एक करने के भाव से अपना तर्क पुष्ट करें।

10(ख). काव्य खंड पर आधारित निम्नलिखित तीन प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 60 शब्दों में दीजिए :
'पतंग' कविता में कवि ने प्रकृति का अनूठा चित्रण किया है। उसे अपने शब्दों में प्रस्तुत कीजिए। [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- आलोक धन्वा की कविता में वर्षा के बाद आने वाली शरद ऋतु का उजला और सजीव प्रकृति-चित्र बच्चों के उल्लास से जुड़ा है।
- प्रकृति के रंग, ध्वनि और स्पर्श से संबंधित बिंब वातावरण को मूर्त बनाते हैं; मानवीकरण से सुबह जीवंत दिखाई देती है।

चरण 1: प्रकृति के प्रमुख बिंब पहचानें भादों के बीत जाने के बाद शरद का स्वच्छ वातावरण आता है। लाल सवेरे की तुलना खरगोश की आँखों से की गई है। उजाला, धूप, खुला आकाश और हलकी हवा मिलकर पतंग उड़ाने के लिए अनुकूल वातावरण रचते हैं। इसलिए ऋतु-चित्रण को सामान्य हरियाली या वर्षा का वर्णन बनाकर नहीं लिखना चाहिए।

चरण 2: दृश्य की गतिशीलता समझें सुबह साइकिल चलाती और घंटी बजाती हुई आती दिखाई देती है। यह मानवीकरण प्रकृति को बच्चों के संसार की गतिविधियों से जोड़ता है। चमकीले इशारों से बुलाता आकाश और पतंगों से भरा वातावरण बच्चों के उत्साह को बढ़ाते हैं। प्राकृतिक दृश्य यहाँ स्थिर पृष्ठभूमि नहीं, खेल और उमंग को प्रेरित करने वाला जीवंत संसार है।

चरण 3: लगभग 60 शब्दों में उत्तर 'पतंग' में भादों के बाद की शरद प्रकृति का उजला चित्र है। खरगोश की आँखों जैसे लाल सवेरे, चमकीली धूप, खुले आकाश और हलकी हवा से वातावरण जीवंत बनता है। सुबह साइकिल चलाती, घंटी बजाती हुई आती प्रतीत होती है। आकाश बच्चों को चमकीले इशारों से बुलाता है। प्रकृति का यह गतिशील, रंगीन रूप बच्चों में पतंग उड़ाने का उत्साह भरता है।

चरण 4: निष्कर्ष शरद की स्वच्छता, लाल सवेरा और मानवीकृत सुबह मिलकर बच्चों के पतंग उड़ाने के उल्लास का सजीव वातावरण बनाते हैं।

त्वरित सुझाव: भादों के बाद की शरद, खरगोश की आँखों जैसा सवेरा और साइकिल चलाती सुबह—इन विशिष्ट बिंबों को अवश्य जोड़ें।

10(ग). काव्य खंड पर आधारित निम्नलिखित तीन प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 60 शब्दों में दीजिए :

'आत्मपरिचय' कविता में कवि एक तरफ तो सुख-दुख दोनों में मग्न रहने की बात करता है तथा दूसरी ओर अंतरतम में फूटती रुलाई की बात करता है। इन विरोधाभासी कथनों का आशय स्पष्ट कीजिए। [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- कवि सुख और दुख दोनों को जीवन के स्वाभाविक अनुभव मानकर स्वीकार करता है। यह स्वीकार जीवन से पलायन नहीं, उसके साथ गहरा लगाव है।
- भीतर की पीड़ा और बाहर की मस्ती एक ही संवेदनशील व्यक्ति में साथ रह सकती हैं। कविता के कथन इसी जटिल भावस्थिति को व्यक्त करते हैं।

चरण 1: सुख-दुख में मग्न रहने का अर्थ कवि किसी एक अनुभव में बँधकर नहीं जीता। वह सुख मिलने पर जीवन को अपनाता है और दुख आने पर भी उससे विमुख नहीं होता। उसकी मस्ती समस्त अनुभवों को आत्मसात करने की क्षमता है, दुख से अनभिज्ञ रहने की अवस्था नहीं।

चरण 2: अंतरतम की रुलाई का आशय प्रेम, वियोग और जीवन की वेदना कवि के अंतर्मन में मौजूद हैं। यही दबा हुआ दुख उसकी रचनात्मक अभिव्यक्ति में फूटता है। बाहर की मस्ती उस भीतरी संवेदना को नकारती नहीं; इसलिए दोनों कथन कवि के व्यक्तित्व के पूरक पक्ष हैं। यहाँ विरोधाभास केवल ऊपर से दिखाई देता है। मनुष्य के भीतर अनेक भाव एक साथ रह सकते हैं; कवि की स्वीकृति उसके दुख को मिटाती नहीं, बल्कि उसे गीत का रूप देकर सहने योग्य बनाती है। इसीलिए उसकी कविता में आनंद और करुणा का सहअस्तित्व स्वाभाविक है।

चरण 3: निष्कर्ष कवि सुख-दुख को समान भाव से अपनाकर मस्त रहता है, पर संवेदनशील होने के कारण उसके भीतर प्रेम और वियोग की पीड़ा भी है। अंतरतम से फूटती रुलाई उसी पीड़ा की अभिव्यक्ति है। अत: मस्ती दुख के अभाव का संकेत नहीं, उसे स्वीकार करके जीने की शक्ति है। दोनों कथन उसके बाहरी जीवनानुराग और भीतरी वेदना को एक साथ प्रकट करते हैं।

त्वरित सुझाव: मस्ती को दुखहीनता न मानें; बाहरी जीवन-स्वीकार और भीतरी वेदना का संबंध स्पष्ट करें।

11(क). काव्य खंड पर आधारित निम्नलिखित तीन प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में दीजिए :

'कैमरे में बंद अपाहिज' कविता से ली गई पंक्ति – 'हम समर्थ शक्तिमान एक दुर्बल को लाएँगे' से वर्तमान टी.वी. पत्रकारिता के किस रूप का पता चलता है ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- कविता में समर्थ संचारक और दुर्बल व्यक्ति का संबंध समानता पर आधारित नहीं है।
- शक्तिमान होने का दावा पत्रकारिता में सत्ता-बोध तथा दूसरे के दुख पर नियंत्रण की मानसिकता को उजागर करता है।

चरण 1: पंक्ति में व्यक्त शक्ति-संबंध पहचानना हम समर्थ शक्तिमान कहकर कार्यक्रम बनाने वाले अपनी सुविधा और अधिकार को आगे रखते हैं। दुर्बल व्यक्ति उनके सामने स्वतंत्र सहभागी के बजाय प्रस्तुत की जाने वाली वस्तु बन जाता है। यह भाषा आत्मीय संवाद की जगह अहंकार दिखाती है।

चरण 2: वर्तमान पत्रकारिता से संबंध जोड़ना ऐसी पत्रकारिता पीड़ित की गरिमा की रक्षा करने के बजाय उसकी विवशता को प्रदर्शन और दर्शक जुटाने का साधन बनाती है। कविता अपाहिज को रुलाने और उसके दुख को कैमरे में बाँधने की कोशिश के द्वारा इसी बनावटी संवेदना पर व्यंग्य करती है।

चरण 3: निष्कर्ष इस पंक्ति से टी.वी. पत्रकारिता का अहंकारी, संवेदनहीन और व्यावसायिक रूप प्रकट होता है। समर्थ मीडियाकर्मी दुर्बल व्यक्ति के दुख को मानवीय संवेदना से समझने के बजाय प्रदर्शन की वस्तु बनाते हैं। उनका उद्देश्य पीड़ित की सहायता से अधिक दर्शकों को आकर्षित करना है।

त्वरित सुझाव: समर्थ और दुर्बल के विरोध से मीडिया का अहंकार तथा पीड़ा के प्रदर्शन की प्रवृत्ति समझाएँ।

11(ख). काव्य खंड पर आधारित निम्नलिखित तीन प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में दीजिए :

सूर्योदय से उषा की जादुई शक्ति का प्रभाव कैसे टूटता दिखाई दे रहा है ? 'उषा' कविता के आधार पर स्पष्ट कीजिए। [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- उषा के समय आकाश के बदलते रंग प्रकृति का रहस्यमय और मोहक दृश्य बनाते हैं।
- सूर्योदय उस रंगमय संक्रमण का अंत है; बढ़ते प्रकाश में उषा का विशिष्ट सम्मोहन समाप्त हो जाता है।

चरण 1: उषा का जादुई सौंदर्य पहचानना कवि ने भोर के आकाश को नीले शंख, राख से लीपे चौके तथा केसर से धुली सिल जैसे बिंबों से चित्रित किया है। ये बदलते रंग और छवियाँ दर्शक को एक स्वप्निल, सम्मोहक अनुभव देते हैं।

चरण 2: सूर्योदय से होने वाला परिवर्तन बताना सूरज निकलते ही प्रकाश फैलता है। नीले जल में झिलमिलाती गौर देह जैसी आकाश की छवि और क्षण-क्षण बदलते रंगों का आकर्षण समाप्त होने लगता है। कवि का जादू टूटने का संकेत इसी उषाकालीन रहस्य के समाप्त होने की ओर है।

चरण 3: निष्कर्ष उषा में आकाश के बदलते नीले, लाल और सुनहरे रंग जादुई दृश्य रचते हैं। सूर्योदय होते ही सूर्य का स्पष्ट प्रकाश फैल जाता है और रंगों की रहस्यमय छवियाँ समाप्त होने लगती हैं। इसी परिवर्तन से उषा के जादुई सम्मोहन का प्रभाव टूटता है।

त्वरित सुझाव: उत्तर में पहले भोर के बदलते रंग, फिर सूर्य के स्पष्ट प्रकाश से उनका समाप्त होना लिखें।

11(ग). काव्य खंड पर आधारित निम्नलिखित तीन प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में दीजिए :

तुलसीदास जी के युग और वर्तमान युग की बेकारी के कारणों में कौन-कौन सी समानताएँ हैं ? 'कवितावली' से उद्धृत छंदों के आधार पर लिखिए। [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- कवितावली में खेती, व्यापार, भिक्षा और चाकरी से जुड़े लोगों की आजीविका का संकट सामने आता है।
- तुलना का आधार लोगों की काम करने की इच्छा नहीं, जीविका के साधनों और अवसरों का अभाव है।

चरण 1: कवितावली का आर्थिक चित्र समझना खेती न किसान को और बनिक को बनिज न जैसे कथन विभिन्न वर्गों के संकट को दिखाते हैं। किसान, व्यापारी और सेवक अपने-अपने व्यवसाय से निर्वाह नहीं कर पा रहे हैं। यह व्यापक आर्थिक अव्यवस्था तथा अवसरों की कमी का चित्र है।

चरण 2: वर्तमान से समानता बताना आज भी आर्थिक विषमता, संसाधनों पर सीमित लोगों का अधिकार और रोजगार के पर्याप्त अवसर न मिलना बेकारी बढ़ाते हैं। गरीब एवं श्रमजीवी वर्ग की असुरक्षा दोनों समयों में दिखाई देती है। केवल आलस्य को कारण मानना कविता के सामाजिक आशय को छोटा कर देगा।

चरण 3: निष्कर्ष तुलसी के युग में खेती, व्यापार और चाकरी के अवसरों का संकट था। आज भी आर्थिक विषमता, संसाधनों का असमान वितरण और रोजगार के अपर्याप्त अवसर बेकारी पैदा करते हैं। दोनों युगों में गरीब तथा श्रमजीवी लोगों की आजीविका असुरक्षित रहती है।

त्वरित सुझाव: खेती, व्यापार और चाकरी के संकट को वर्तमान में रोजगार तथा संसाधनों की असमानता से जोड़ें।

12(क). गद्य खंड पर आधारित निम्नलिखित तीन प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 60 शब्दों में दीजिए :

महादेवी वर्मा ने भक्तिन के जीवन का दूसरा परिच्छेद किसे कहा है और उस परिच्छेद में भक्तिन का अनुभव कैसा रहा ? [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- जीवन के दूसरे परिच्छेद का संबंध भक्तिन के वैवाहिक तथा पारिवारिक जीवन से है।
- पुत्रियों को जन्म देने के कारण मिलने वाला भेदभाव इस चरण के दुख का प्रमुख कारण है; पति का प्रेम उसे कुछ सहारा देता है।

चरण 1: दूसरे परिच्छेद की पहचान करना महादेवी वर्मा ने भक्तिन के वैवाहिक जीवन को उसके जीवन का दूसरा परिच्छेद कहा है। इस चरण में उसके लगातार तीन बेटियाँ हुईं। परिवार की पुत्र-प्रधान मानसिकता ने मातृत्व के इस अनुभव को सम्मान देने के बजाय उसकी उपेक्षा का कारण बना दिया।

चरण 2: उस चरण के सुख-दुख समझाना सास और जिठानियाँ उसे तथा उसकी लड़कियों को हीन समझती थीं। अधिक परिश्रम के बावजूद भोजन और व्यवहार में उनके साथ भेदभाव होता था। पति उसे प्रेम और सम्मान देता था। उसी सहारे उसने अलग गृहस्थी बसाई, किंतु इस चरण में कुल मिलाकर सुख की अपेक्षा दुख अधिक रहा। जिठानियों के पुत्रों को अधिक सुविधा मिलती थी, जबकि उसकी बेटियाँ काम में लगी रहती थीं। यह अंतर बताता है कि उसके दुख का कारण केवल काम का बोझ नहीं, बल्कि परिवार में लड़के और लड़की के प्रति बरता जाने वाला असमान व्यवहार भी था।

चरण 3: निष्कर्ष लेखिका ने भक्तिन के वैवाहिक जीवन को दूसरा परिच्छेद कहा है। तीन बेटियाँ होने पर सास और जिठानियों ने उसकी उपेक्षा की। उसे तथा बेटियों को अधिक श्रम करना पड़ता और भोजन में भी भेदभाव सहना पड़ता था। पति का प्रेम उसे सहारा देता था; उसी के बल पर वह अलग गृहस्थी बसा सकी। फिर भी इस चरण में सुख की अपेक्षा दुख अधिक था।

त्वरित सुझाव: दूसरा परिच्छेद लिखते समय वैवाहिक जीवन, तीन बेटियों पर उपेक्षा और पति के प्रेम—तीनों को जोड़ें।

12(ख). गद्य खंड पर आधारित निम्नलिखित तीन प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 60 शब्दों में दीजिए :

'बाज़ार दर्शन' पाठ के संदर्भ में लिखिए कि 'पर्चेजिंग पावर' से गर्वित लोगों का बाज़ार पर क्या प्रभाव पड़ता है ? [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- यह प्रश्न जैनेन्द्र कुमार के पाठ में क्रयशक्ति के विवेकपूर्ण उपयोग तथा दिखावे के लिए खरीदारी के बीच का अंतर स्पष्ट करता है।
- बाज़ार की सार्थकता मनुष्य की वास्तविक आवश्यकताओं की पूर्ति में है; अनावश्यक खरीदारी बाज़ारूपन को बढ़ाती है।

चरण 1: क्रयशक्ति से उत्पन्न मनोवृत्ति समझिए पर्चेजिंग पावर पर गर्व करने वाला व्यक्ति अपनी आवश्यकता से अधिक अपनी धन-सामर्थ्य को महत्त्व देता है। आकर्षक वस्तुओं को देखकर उसे लगता है कि वह सब कुछ खरीद सकता है। इसलिए उसका चुनाव उपयोगिता और जरूरत से संचालित नहीं होता। खरीदना उसके लिए पैसे की ताकत दिखाने और अपने अहं को तुष्ट करने का साधन बन जाता है।

चरण 2: बाज़ार पर पड़ने वाला प्रभाव बताइए ऐसे ग्राहक विक्रेता को उपयोगी वस्तुएँ उचित मूल्य पर देने के बजाय ग्राहक को लुभाने और उससे अधिक लाभ लेने की प्रेरणा देते हैं। बाज़ार में दिखावा, अनावश्यक आकर्षण और छल-कपट बढ़ते हैं। ग्राहक और विक्रेता का सहज मानवीय संबंध कमजोर होता है। अत: पाठ में आलोचना धन होने की नहीं, बल्कि धन के गर्व से संचालित विवेकहीन उपभोग की है।

चरण 3: लगभग 60 शब्दों में उत्तर पर्चेजिंग पावर से गर्वित लोग वास्तविक आवश्यकता के बजाय धन की शक्ति दिखाने के लिए खरीदते हैं। वे बाज़ार के आकर्षण में फँसकर अनावश्यक वस्तुएँ लेते हैं और बाज़ारूपन को बढ़ावा देते हैं। इससे व्यापार में छल-कपट, दिखावा तथा लाभ की प्रवृत्ति बढ़ती है। बाज़ार का आवश्यकताओं की पूर्ति करने वाला उद्देश्य पीछे रह जाता है और मानवीय सद्भाव कमजोर होता है।

चरण 4: निष्कर्ष क्रयशक्ति का अहंकार बाज़ार की उपयोगिता घटाकर बाज़ारूपन और छल-कपट को बढ़ावा देता है।

त्वरित सुझाव: उत्तर में पहले अनावश्यक खरीदारी का कारण, फिर उससे बाज़ार के चरित्र में आने वाला परिवर्तन लिखिए।

12(ग). गद्य खंड पर आधारित निम्नलिखित तीन प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 60 शब्दों में दीजिए :

'काले मेघा पानी दे' पाठ में लेखक ने किन अंधविश्वासों की ओर संकेत किया है ? स्पष्ट कीजिए। [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- धर्मवीर भारती के संस्मरण में वर्षा से जुड़े लोकाचार और लेखक की तार्किक प्रतिक्रिया का द्वंद्व उभरता है।
- उत्तर में इंदर सेना पर पानी डालने के अनुष्ठान को वर्षा कराने की मान्यता से जोड़ना आवश्यक है।

चरण 1: पाठ में वर्णित लोकाचार पहचानिए वर्षा न होने पर लड़कों की इंदर सेना घर-घर जाकर पानी माँगती है। लोग उन पर पानी उड़ेलते हैं। इस क्रिया के पीछे यह विश्वास है कि इंद्र प्रसन्न होंगे और वर्षा करेंगे। लेखक पानी की कमी के समय इस तरह पानी बहाने को व्यर्थ मानता है; उसे इस अनुष्ठान और वर्षा के बीच कोई तार्किक कारण-संबंध नहीं दिखाई देता।

चरण 2: जीजी की व्याख्या से अंतर स्पष्ट कीजिए जीजी इसे त्याग और दान की भावना से जोड़कर समझाती हैं। जिस वस्तु की कमी हो, उसी का दान करना उनके लिए विशेष महत्त्व रखता है। लेखक की दृष्टि से पानी बहाने से बादल बरसने की धारणा अंधविश्वास है, जबकि जीजी के तर्क में लोकजीवन की आस्था और सामूहिक सहयोग की भावना भी निहित है। इस अंतर को स्पष्ट करने से उत्तर केवल रीति के वर्णन तक सीमित नहीं रहता।

चरण 3: लगभग 60 शब्दों में उत्तर लेखक ने वर्षा कराने के लिए इंदर सेना पर पानी डालने की मान्यता की ओर संकेत किया है। सूखे में लोग लड़कों की टोली पर पानी उड़ेलकर इंद्र को प्रसन्न करना चाहते हैं। लेखक इसे पानी की बरबादी और अंधविश्वास मानता है। जीजी इसे त्याग तथा दान से जोड़ती हैं। प्रसंग में वर्षा संबंधी लोकविश्वास और लेखक की तर्कशील दृष्टि का द्वंद्व उभरता है।

चरण 4: निष्कर्ष इंदर सेना पर पानी डालने से वर्षा होने की मान्यता पाठ का प्रमुख अंधविश्वास है।

त्वरित सुझाव: इंदर सेना की क्रिया, उससे जुड़ा वर्षा का विश्वास और लेखक की आपत्ति—तीनों को साथ रखकर उत्तर लिखिए।

13(क). गद्य खंड पर आधारित निम्नलिखित तीन प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में दीजिए :

'पहलवान की ढोलक' पाठ के आधार पर लिखिए कि रात्रि की विभीषिका को सिर्फ पहलवान की ढोलक ही ललकार कर चुनौती देती थी, कैसे। [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- रेणु की कहानी में ढोलक की आवाज भय और निराशा के बीच जीवन-संघर्ष की प्रेरणा है।
- रात्रि की विभीषिका का संबंध महामारी, सन्नाटे और मृत्यु के भय से है।

चरण 1: रात्रि के वातावरण को समझिए महामारी से त्रस्त गाँव में रात का अंधकार, निस्तब्धता और मरते लोगों की पीड़ा भयावह वातावरण बनाते हैं। अभाव तथा मृत्यु की आशंका से ग्रामीण निराश हो जाते हैं। इसलिए रात्रि की विभीषिका केवल प्राकृतिक अंधकार नहीं, असहाय मनुष्यों के भय और दुख का भी रूप है।

चरण 2: ढोलक की भूमिका स्पष्ट कीजिए पहलवान की ढोलक की गूँज उस भयावह सन्नाटे को तोड़ती है। उसकी ताल कुश्ती के संघर्ष की याद दिलाकर ग्रामीणों में विपत्ति से लड़ने की शक्ति जगाती है। ढोलक बीमारी दूर नहीं करती, पर टूटते मनों को सहारा देकर जीवन के पक्ष में खड़ी होती है।

चरण 3: लगभग 40 शब्दों में उत्तर महामारी से पीड़ित गाँव में रात का सन्नाटा और मृत्यु का भय छाया था। केवल पहलवान की ढोलक की गूँज उस भयावह निस्तब्धता को तोड़ती थी। उसकी ताल ग्रामीणों को मानसिक सहारा देकर निराशा से लड़ने और जीवित रहने का साहस देती थी।

चरण 4: निष्कर्ष ढोलक भय और मृत्यु के वातावरण में साहस तथा जीवन-संघर्ष का स्वर बनती है।

त्वरित सुझाव: रात्रि की भयावहता बताने के बाद ढोलक के मानसिक प्रभाव को स्पष्ट करें; उसे बीमारी की दवा न बताएँ।

13(ख). गद्य खंड पर आधारित निम्नलिखित तीन प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में दीजिए :
शिरीष का फूल अपने जीवन की अजेयता के मंत्र का प्रचार किस प्रकार करता है ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- शिरीष की कोमलता के साथ उसकी कठिन परिस्थिति सहने की क्षमता को पहचानना प्रश्न का केंद्र है।
- अजेयता का अर्थ प्रतिकूलता के सामने जीवन का उल्लास और सक्रियता बनाए रखना है।

चरण 1: शिरीष की परिस्थिति और स्वभाव जोड़िए जेठ की भीषण गर्मी और लू में जब प्रकृति झुलसती है, तब शिरीष फूलता रहता है। उसके कोमल फूल प्रतिकूल मौसम से हारकर जीवन का उल्लास नहीं छोड़ते। इसीलिए शिरीष का सौंदर्य केवल बाहरी कोमलता नहीं, भीतर की सहनशक्ति का भी प्रमाण है।

चरण 2: अजेयता का संदेश स्पष्ट कीजिए शिरीष अपने आचरण से सिखाता है कि कठिनाइयों में भी संतुलन और मस्ती बनाए रखनी चाहिए। वह शिकायत करने या परिस्थितियों के आगे झुकने के बजाय खिलकर जीवन की निरंतरता प्रकट करता है। उसका संदेश कर्म और स्वभाव के माध्यम से व्यक्त होता है।

चरण 3: लगभग 40 शब्दों में उत्तर शिरीष भीषण गर्मी और लू में भी कोमल फूलों से लदा रहता है। प्रतिकूल परिस्थितियाँ उसकी मस्ती और खिलने की शक्ति नहीं छीन पातीं। इस प्रकार वह अविचल रहकर, प्रसन्नता से जीकर और विपत्ति से हार न मानकर जीवन की अजेयता का संदेश देता है।

चरण 4: निष्कर्ष विपरीत परिस्थितियों में भी खिलते रहना शिरीष की अजेय जीवनशक्ति का प्रत्यक्ष संदेश है।

त्वरित सुझाव: उत्तर में गर्मी और लू की प्रतिकूलता का उल्लेख करके उससे शिरीष की मस्ती तथा सहनशीलता का संबंध जोड़िए।

13(ग). गद्य खंड पर आधारित निम्नलिखित तीन प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में दीजिए :
आदर्श समाज की संकल्पना के बारे में डॉ. आंबेडकर के क्या विचार हैं ? उन्हें अपने शब्दों में व्यक्त कीजिए। [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- आंबेडकर के आदर्श समाज की बुनियाद स्वतंत्रता, समता और भ्रातृत्व है।
- लोकतंत्र की सामाजिक सार्थकता लोगों के बीच संपर्क, सहभागिता और पारस्परिक सम्मान से बनती है।

चरण 1: मूल आधार पहचानिए आंबेडकर ऐसा समाज चाहते हैं जिसमें जन्म या जाति के कारण किसी व्यक्ति को हीन न माना जाए। सभी को अपनी क्षमताओं के विकास और व्यवसाय चुनने की स्वतंत्रता मिले। समान अवसर तथा मानवीय गरिमा उनके सामाजिक आदर्श के आवश्यक पक्ष हैं।

चरण 2: समाज की गतिशीलता समझिए आदर्श समाज में समूह एक-दूसरे से कटे नहीं रहते। उनके बीच संपर्क और अनुभवों का आदान-प्रदान होता है। समाज के एक भाग में होने वाला परिवर्तन दूसरे भागों तक पहुँच सके। इस सामाजिक सहभागिता को भ्रातृत्व से जोड़ने पर लोकतंत्र केवल शासन-पद्धति न रहकर जीवन का व्यवहार बनता है।

चरण 3: लगभग 40 शब्दों में उत्तर डॉ. आंबेडकर का आदर्श समाज स्वतंत्रता, समता और भ्रातृत्व पर आधारित है। उसमें जातिगत भेदभाव न हो तथा सभी को उन्नति के अवसर मिलें। समाज गतिशील हो, विभिन्न वर्गों में मुक्त संपर्क और अनुभवों का आदान-प्रदान हो तथा सभी एक-दूसरे का सम्मान करें।

चरण 4: निष्कर्ष समानता, स्वतंत्रता, भाईचारे और मुक्त सामाजिक संपर्क से आंबेडकर का आदर्श समाज बनता है।

त्वरित सुझाव: तीन मूल आदर्शों के साथ सामाजिक गतिशीलता तथा वर्गों के बीच संपर्क का उल्लेख अवश्य कीजिए।